55वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार, 2019

55th Jnanpith Award, 2019

श्री अक्कितम अच्युतन नम्बूदिरि

Shri Akkitham Achyuthan Nambudiri

वाग्देवी : पुरस्कार-प्रतीक

ज्ञानपीठ पुरस्कार के प्रतीक के रूप में स्वीकृत वाग्देवी सरस्वती की यह कांस्यमूर्ति सरस्वती-कण्ठाभरण-प्रासाद नामक मन्दिर में विराजमान थी जिसका निर्माण मध्य प्रदेश की धारा नगरी में विद्याव्यसनी नरेश भोज ने 1035 ई. में कराया था। अब यह मूर्ति लन्दन के ब्रिटिश संग्रहालय में प्रदर्शित है। भारतीय ज्ञानपीठ ने वाग्देवी के मस्तक के पृष्ठ भाग में प्रभामण्डल सम्मिलित किया है जिसमें समाविष्ट, मथुरा के कंकाली टीला से प्राप्त प्राचीनतम जैन तोरण 'रत्न-त्रय' का प्रतीक है। वाग्देवी द्वारा गृहीत पुस्तक, कमण्डलु, अक्षमाला और कमल क्रमशः ज्ञान, संयम, वैराग्य और अन्तर्दृष्टि के प्रतीक हैं।

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार को वाग्देवी की कांस्य-प्रतिमा भेंट की जाती है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार

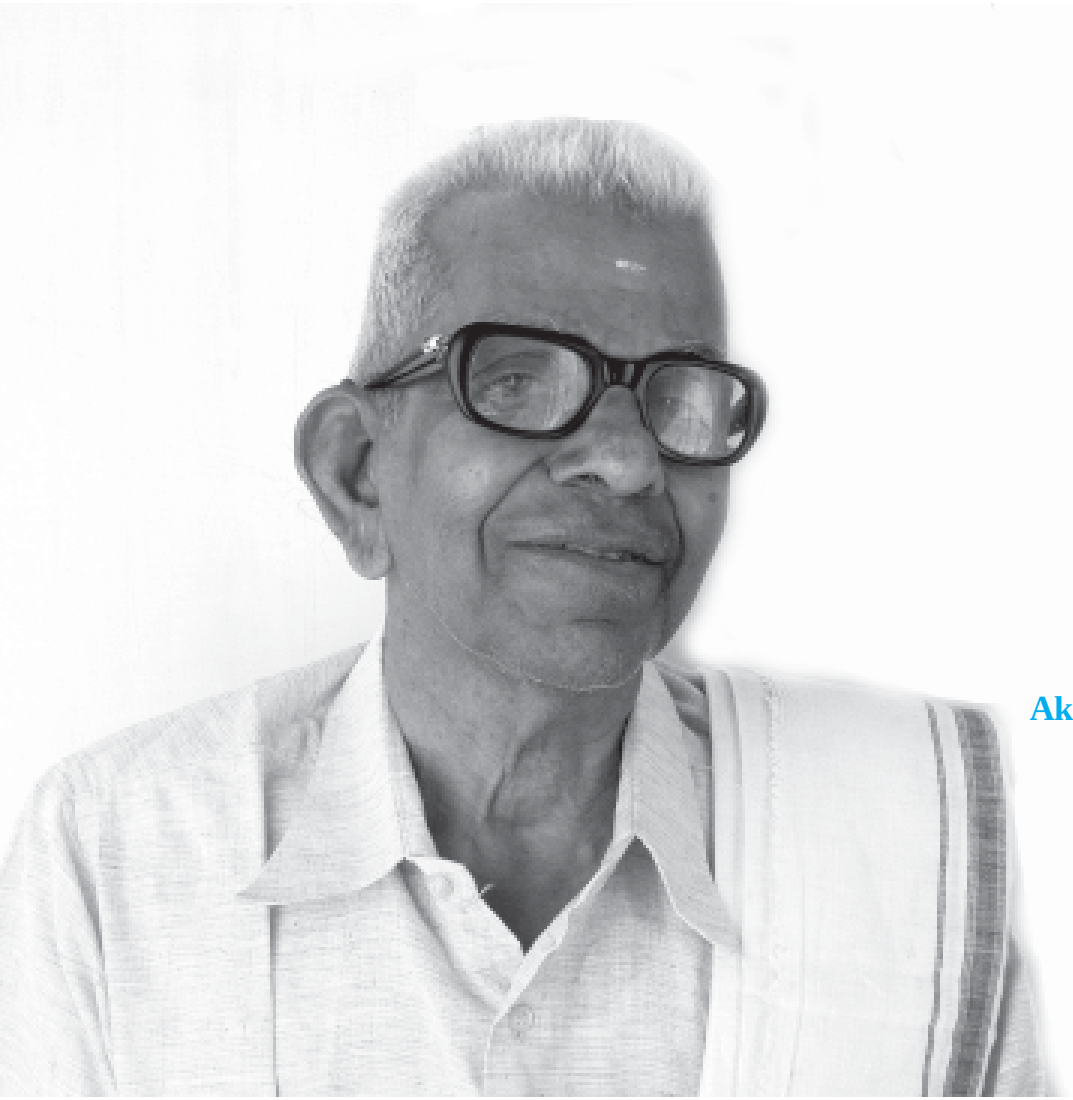

55वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार

अक्कितम अच्युतन नम्बूदिरि
Akkitham Achyuthan Nambudiri

प्रशस्ति

भारतीय ज्ञानपीठ को गर्व है कि मलयालम भाषा के प्रख्यात कवि अक्कितम अच्युतन नम्बूदिरि को भारतीय साहित्य में उनके असाधारण अवदान के लिए वर्ष 2019 का 55वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है। वे छठे ऐसे मलयाली लेखक हैं, जो इस पुरस्कार से सम्मानित हुए हैं।

अक्कितम का जन्म 18 मार्च, 1926 को वैदिक विद्वानों के एक परिवार में हुआ था। परिवार की सामान्य परम्परा के अनुरूप उन्होंने ऋग्वेद का अध्ययन किया। वैदिक सिद्धान्तों और समाजवादी आदर्शों में आश्चर्यजनक समानताएँ देखकर वे इस जीवन दृष्टि के समर्थक बन गये और करीब सात वर्षों तक इसी वैचारिक मार्ग पर चलते रहे। तार्किक रूप से देखा जाये तो 1952 में प्रकाशित उनकी महान कृति 'इरुपताम् नूट्टाण्टिंटे इतिहासम्' (बीसवीं सदी का इतिहास) किसी भी भारतीय भाषा के वामपंथ से मोहभंग की अपनी तरह की पहली पश्चाताप पूर्ण कविता है।

यह कृति उन लोगों के लिए करुणा से परिपूर्ण है जिनके साथ सत्ताधीशों ने हमेशा से धोखा किया है। इसी तरह अक्कितम की कोई भी बड़ी रचना बच्चों, विकलांगों और वंचितों के प्रति उनकी अपूर्व करुणा के कारण अपने आप में एक अलग कोटि की रचना के रूप में दिखायी देती है।

अक्कितम ने आस्था और तर्क तथा शहरीकरण, परम्परा और आधुनिकता के सभी दबावों को झेला है। सिर्फ कविता में ही नहीं, छुआछूत के उन्मूलन और नम्बूदिरि स्त्रियों की मुक्ति-चेतना और उनके उद्धार के सामाजिक आंदोलनों में भी वे आगे रहे हैं। भारतीय विरासत की सर्वोत्तम परम्पराओं को सुरक्षित रखने के अपने जुनून में क्षमाप्रार्थी हुए बिना उन्होंने भागवत पुराण का मलयालम में अनुवाद किया ताकि सभी इसे आसानी से समझ सकें।

उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार (1973), केरल साहित्य अकादमी फेलोशिप (2006), कबीर सम्मान (2007), एषुत्तच्छन पुरस्कार (2008), मूर्तिदेवी पुरस्कार (2011) और तुंचत्त एषुत्तच्छन मलयालम यूनिवर्सिटी से 2019 में डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। 2017 में उन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया गया।

भारतीय ज्ञानपीठ उनके सुदीर्घ रचनाशील जीवन और भारतीय साहित्य को आगे समृद्ध करने की उनकी योग्यता के लिए शुभकामनाएँ अर्पित करता है।

प्रतिभा राय
अध्यक्ष
प्रवर परिषद्

कुमरनल्लूर, केरल
2019

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी
भारतीय ज्ञानपीठ

CITATION

Bharatiya Jnanpith takes pride in conferring the 55th Jnanpith award for the year 2019 on the eminent Malayalam poet Akkitham Achyutan Nambudiri in recognition of his outstanding contribution to Indian literature. He is the sixth Malayalam writer to be conferred the Jnanpith.

Akkitham, born into a family of Vedic scholars on 18 March 1926, learnt Rigveda as a matter of course. Discovering amazing similarities in the Vedic tenets and the socialist ideals, he turned a fellow traveller and remained so for nearly seven years. His magnum opus, 'Irupatham Noottandinte Ithihasam' (The Epic of the Twentieth Century, 1952) is arguably the first of its kind penitential poem in any Indian language on one's disenchantment with communism.

'The Epic' is replete with compassion for the ordinary people who are perennially deceived by those in power. So is any major poem of Akkitham - compassion for children, the disabled and the underprivileged sets it apart. Faith and reason, pressures of urbanization, tradition and modernity-he has confronted them all. Not just in poetry; he was in the forefront of social movements for removal of untouchability and emancipation of Nambudiri women. Unapologetic about his penchant for preserving the best traditions of the Indian heritage, he translated Bhagavata Purana into Malayalam to make it intelligible to all.

Recipient of many coveted honours like the Sahitya Akademi award (1973), the Kerala Sahitya Akademi Fellowship (2006), Kabir Samman (2007), Ezhuthachan award (2008), Moortidevi Puraskar (2011) and honorary doctorate from the Thunchath Ezhuthachan Malayalam University (2019), Akkitham was bestowed with Padma Shri in 2017.

Bharatiya Jnanpith wishes Akkitham a long creative life as well as the ability to enrich Indian literature further.

Kumaranallur, Kerala
2019

Pratibha Ray
Chairperson
Selection Board

Sahu Akhilesh Jain
Managing Trustee
Bharatiya Jnanpith

जन-जन के रचनाकार : अक्कितम

आलोक रंजन

अक्कितम अच्युतन नंबूदिरि मलयालम भाषा और साहित्य का ऐसा नाम या एकमात्र नाम है जिसे 'महाकवि' कहा जाता है। भारतीय परम्परा में महाकवि बहुत कम लोग हुए हैं और जो हुए उनमें से ज़्यादातर प्राचीन भारत के जीवन का हिस्सा रहे परन्तु अक्कितम हमारे समकालीन जीवन का हिस्सा हैं। प्राचीन काल से अब तक जीवन की परिस्थितियाँ, उत्पादन के साधन, खान-पान आदि अभूतपूर्व रूप से बदले हैं। इस दशा में तब से लेकर अब तक साहित्य ने तो अपने को बदला ही है साथ में साहित्य के प्रत्यक्ष उपभोक्ता पाठकों की जरूरत और समझ में भी बदलाव आया है। आज का जीवन निरन्तर चुनौतीपूर्ण रहा है, व्यक्तिगत और सामाजिक सम्बन्धों में जटिलताएँ पुराने समय की तुलना में बहुत बढ़ गई हैं। प्राचीन की तुलना में आज के समाज का जीवन सरल नहीं रह गया है इसलिए साहित्य जो किसी भी समाज का प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब दिखाता है वह भी अपने समय के हिसाब से जटिलताओं को प्रकट करता है। अब महाकवि होने के लिए कविकर्म की गहराई और विस्तार का निस्सीम और गहन होना जरूरी है। अक्कितम उस साहित्यिक गहराई और विस्तार के जीवित प्रतीक हैं। मलयाली समाज का साहित्यानुराग देश के किसी भी समाज की तुलना में गहरा है और वह अपने साहित्यिक नायकों का चयन जल्दबाज़ी में नहीं करता। इस समाज में रचनाकारों का अद्‌भुत सम्मान है लेकिन शर्त यही कि रचनाएँ जनोन्मुख हों। यह प्रक्रिया बहुत सरल और साफ सुथरी है। एक रचनाकार जब सबके लिए सोचता है तभी उसका लोकप्रिय होना सम्भव है। ऐसी प्रसिद्धि स्थायी होती है। यह रातोंरात सम्भव ही नहीं है।

अपनी प्रतिनिधि कविताओं की एक किताब की भूमिका में वे लिखते हैं: ''सारे साहित्यकार सोचते हैं कि उन्हें उचित कीर्ति नहीं मिली है। यह बोध मुझे भी होता है कि मुझे मेरे लायक कीर्ति आज या कल जरूर मिलेगी। एक दिन सुबह जागकर उठते ही सौभाग्य के मेरे सिर पर बरस जाने जैसी कोई घटना नहीं हुई।'' अक्कितम की इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें मलयाली समाज का स्नेह और सम्मान अचानक से हासिल नहीं हुआ परन्तु जो प्राप्त हुआ वह स्थायी है। आलोचकों ने अक्कितम साहित्य की प्रशंसा खूब की है। इन सबमें एक बात जो आम तौर पर मुखर होकर आती है वह यह कि उनकी रचनाओं का गठन और उनके बिंबविधान ऐसे होते हैं कि सामान्य पाठकों को भी आसानी से समझ में आ जाएँ। जनोन्मुख साहित्य और जन के लिए साहित्य दोनों का अद्‌भुत समावेश उनके यहाँ दिखता है। यही कारण है कि आम बोलचाल में भी उनके द्वारा रचित पंक्तियाँ इस प्रकार समाहित हो जाती हैं जैसे वे सदियों से सामान्य लबो-लहजे का हिस्सा रहे हों।

कई बार यह देखा गया है कि लोगों ने उनकी कोई रचना नहीं पढ़ी, लेकिन उनकी लिखित पंक्तियाँ अपनी बात के समर्थन में किसी शास्त्रीय प्रमाण की तरह प्रस्तुत करते हों। इन पंक्तियों में सबसे ज्यादा प्रयुक्त पंक्ति है 'वेलीचम दुखमानुन्नी तमसल्लो सुखप्रदम'। सहज भाषा में बस इतना है कि 'बच्चे, प्रकाश में दुख है और अन्धकार सुखद'। लेकिन यह वाक्य एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन को निरूपित करता है जो बहु-स्तरीय अर्थ देता है। मनुष्य जब ज्ञान प्राप्त कर लेता है तब वह दुखी हो जाता है जब तक अज्ञान

रहता है वह सुखी रहता है। जानने से दुख और अज्ञान से सुख! इसके अर्थ का लचीलापन ही है कि यह मलयालम भाषा की आम बोलचाल का हिस्सा है। किसी भी रचनाकार के लिए इस तरह की जन-स्वीकृति एक बड़ी उपलब्धि की तरह है। इसी तरह की एक और पंक्ति यहाँ द्रष्टव्य है— 'तेरुविल काका कोत्तुन्नु चत्तपेन्नीडे कन्नुगल, मुलचत्ती वलिक्युन्नु नरवर्ग नवातिथि'। रास्ते पर मरी पड़ी लड़की की आँखों को कौव्वा खोद रहा है, उसके स्तनों से पुरुष समाज का नया अतिथि शिशु लगा हुआ है। यह मार्मिक दृश्य समाज में स्त्रियों की सामान्य स्थिति पर तीखी टिप्पणी की तरह है। एक सजग रचनाकार का यही कर्तव्य है और समाज के प्रति देय भी कि वह अपने समाज की विसंगतियों को कितना अपनी रचनाओं में प्रकट कर पाता है।

अक्कितम वर्तमान में 94 वर्ष के हैं और उनका काव्य-जीवन बहुतों के सामान्य जीवन तक से लम्बा है। ज़ाहिर है वे केरल सहित भारत के सभी महत्त्वपूर्ण समाज-राजनीतिक परिवर्तनों से रू-ब-रू हुए होंगे। यह देखना दिलचस्प होगा कि उनकी इन परिवर्तनों के प्रति क्या प्रतिक्रिया रही। उनके द्वारा रचित साहित्य से परिचय प्राप्त करने के बाद यह कहना कठिन नहीं रह जाता कि उनके यहाँ परम्परा, आधुनिकता के लिए खुराक की तरह आई है। आधुनिकता की स्पष्ट वैचारिक समझ के लिए परम्परा का होना उतना ही आवश्यक है जितना खेत में खड़ी फसल के लिए खाद।

उनके साहित्य के विपुल भंडार में उनकी ऐतिहासिक चेतना को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है जिसने उनकी कृतियों को कालजीवी न बनाकर कालजयी बनाया। उनकी रचनाएँ समय विशेष में न रहकर समय और भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण करती हैं। उनमें अपने युगबोध के साथ साथ आगामी जीवन की झलक का सहज सामंजस्य मिलता है। अक्कितम का सम्पूर्ण रचना संसार इस बात का द्योतक है कि परिवर्तन की प्रक्रिया परम्परा का ही हिस्सा है जो कि नवीनता के उन्मेष के लिए वातावरण का निर्माण करती है। नवीनता या आधुनिक बोध का उत्स शून्य में सम्भव नहीं है। यहाँ पर उनकी एक प्रसिद्ध कृति 'बलिदर्शनम' का उदाहरण उपयुक्त है। यह रचना राजा महाबली के ओणम के समय के पुनरागमन पर लिखी हुई है। इस कृति की विशेषता यह है कि यह एक ही साथ परम्परा और आधुनिकता दोनों में विचरण करती है, साथ ही इसमें परिवर्तन और ऐतिहासिकता को सहज ही रेखांकित किया जा सकता है। यह कविता स्वप्न में चलती है जिसके अन्त में भगवान महाबली प्रकट होते हैं। इस कविता के माध्यम से कवि ने मलयालम समाज के क्रमिक परिवर्तन को दर्शाया है। ओणम ऐसा त्योहार है जो केरल के हर घर में मनाया जाता है। इस सर्वस्वीकृत त्योहार के माध्यम से सामाजिक चिन्तन और जीवन शैली का बदलाव काव्यात्मक उच्चता के साथ देखना ही इस कविता का उत्कर्ष है।

अक्कितम ने महाबली के इस त्योहार के मूल्यों को सर्वथा आधुनिक सन्दर्भों में रखकर देखा है। यह लम्बी कविता इस बात का उदाहरण है कि परिवर्तन और निरन्तरता, परम्परा को माँजते हैं। परिणामस्वरूप परम्परा मूल अर्थों को बनाए रखते हुए अपने वास्तविक सन्दर्भों में आधुनिकता को अंगीकार करते हुए भविष्य की ओर बढ़ती है। स्वप्न के अन्त में जब महाबली प्रकट होते हैं तो वे ओणम पर्व में घर कर चुकी दिखावे की प्रवृत्ति के प्रति क्षुब्ध दिखते हैं। ठीक यहीं पर यह कविता आधुनिकता और परम्परा दोनों की तार्किक आलोचना प्रस्तुत करती है। जब हम अपनी परम्पराओं को जानने का प्रयास करते हैं तो हमारा युगबोध सुदृढ़ होता है। इसके बाद ही आधुनिकता को समग्रता में समझने और उसकी सम्यक् आलोचना करने के पैमाने स्पष्ट होते हैं। 'बलिदर्शनम' इस मायने में भी महत्त्वपूर्ण है कि यह

आधुनिकता के नाम पर सही और गलत को समझे बिना आगे बढ़ते रहने की सामान्यतया स्वीकृत प्रक्रिया के खिलाफ खड़ी रचना है। आधुनिकता के नाम पर सब कुछ को आत्मसात करते जाना समस्याओं को बुलावा देना है और पीढ़ी दर पीढ़ी यह क्रिया चलती रहती है। आम तौर पर हम इस पक्ष को अनावश्यक मानकर चलते हैं। अक्कितम एक स्थान पर कहते हैं कि 'सच यह है कि आधुनिकता के आईने में सब वैसा नहीं होता जैसा दिखाई देता है। उसके वास्तविक दर्शन के लिए परम्परा से उसकी प्रामाणिकता की जाँच आवश्यक है।' यह कथन मलयाली समाज के साथ-साथ सभी समाजों की परम्परा और आधुनिकता सम्बन्धी चेतना की गहरी आलोचना है। कवि का यह काव्य-दर्शन ही उन्हें दशकों तक मलयाली संस्कृति के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित करता है। लोक और समय की इस गम्भीर समझ की भाव भूमि पर ही अक्कितम का रचना संसार खड़ा है।

इस तरह के समाजदर्शन पर समाज की क्या प्रतिक्रिया होती है इसे जानने समझने के लिए यहाँ बलीदर्शनम कविता की रचना प्रक्रिया को लेकर एक दिलचस्प प्रसंग का उल्लेख समीचीन जान पड़ता है। अक्कितम लम्बे समय तक आकाशवाणी से जुड़े रहे। एक बार उनके स्टेशन निदेशक ने उनके पास आकर कहा कि वे ओणम पर कविता लिखें। अक्कितम ने लिखना शुरू तो कर दिया लेकिन कुछ सँभल ही नहीं पा रहा था। इसके बाद निदेशक ने उन्हें घर जाने की अनुमति दे दी। कवि कुछ दिनों तक अपने काम पर नहीं आए। लेकिन काम पर नहीं आना ही कहाँ का हल होता है! कई छन्दों में लिखने की कोशिश हुई, कई कोशिशें लिखकर फाड़ दी गईं। फिर जाकर यह रचना सामने आई। जिस दिन आकाशवाणी से इसका प्रसारण हुआ उसी दिन मातृभूमि अखबार से इसे उनको देने की माँग आ गई। रेडियो और अखबार के माध्यम से यह कविता मलयालम जनजीवन का काव्य बन गई।

महाकवि अक्कितम की राजनीतिक दृष्टि एक ऐसा बिन्दु है जिसे लेकर बात करना जरूरी है। वे राजनीतिक विचारधारा के

रूप में उस बात का समर्थन करते हैं जहाँ कोई किसी का शोषण न करे लेकिन वे कम्युनिस्ट नहीं हैं। बल्कि यह कहा जा सकता है कि उन्होंने समय समय पर कम्युनिस्ट राजनीति की आलोचना ही की है। वे एक स्थान पर कहते हैं ''मैं सारे भौतिक और मानसिक शोषणों से नफरत करता हूँ। मैं एक नव संसार का सपना देखता हूँ। वहाँ सारे लोग काम करेंगे। हाथ और जीभ पर जंजीरें नहीं पड़ेंगी। दिमाग और पेट भरेंगे। ...क्षितिज कितना सुन्दर होता है लेकिन वह हमेशा दूर ही बना रहता है।'' इससे उनकी राजनीति सम्बन्धी स्पष्ट समझ का पता चलता है जहाँ वे सभी प्रकार के शोषण के खिलाफ खड़े होने की बात करते हैं, लेकिन एक तरह से निराश भी होते हैं कि निकट भविष्य में यह सम्भव नहीं। इस प्रस्थान बिन्दु से केरल के राजनीतिक परिदृश्य की ओर प्रवेश करने पर हम पाते हैं कि लम्बे समय तक कम्युनिस्ट सरकार रहने के बावजूद शोषण और रोजगार सम्बन्धी मूल प्रश्न बने ही हुए हैं। एक शोषण मुक्त समाज जहाँ सबको रोजगार मिले एक यूटोपिया अभी भी बना हुआ है जिसके सम्बन्ध में उन्होंने कहा था कि 'क्षितिज कितना सुन्दर होता है लेकिन वह हमेशा दूर ही बना रहता है'। वे ऐसे समाज की इच्छा तो करते हैं लेकिन राजनीति से साहित्य को पृथक् रखने की बात भी करते हैं।

केरल के प्रसिद्ध अखबार 'मातृभूमि' को पिछले वर्ष दिए गए एक साक्षात्कार में उन्होंने अपनी इस धारणा को मजबूती से रखा है ''राजनीतिक रूप से सचेत होना साहित्य के बजाय दल के हित में है ...उस अर्थ में साहित्य की उपयोगिता केवल राजनीतिक दल के विकास की जाती है।'' यहाँ कवि का अभिप्राय साहित्य को किसी खास विचारधारा वाले राजनीतिक दल के बजाय समय और समाज के प्रति खुले दृष्टिकोण रखने वाला बनाने से है। अक्कितम के समग्र साहित्य को देखते हुए यह बात प्रमाणित भी होती है कि भले ही वे खास विचारधारा से नहीं बँधे, लेकिन समाज और आम जन को लेकर उनके सरोकार कभी संकीर्ण दृष्टि के शिकार नहीं हुए। राजनीति का उपयोग जब एकांगी तरीके से होने लगे तो वह अपने उद्देश्यों को सीमित करने लगती है। जबकि यह सबके प्रति जिम्मेदार होने वाली प्रक्रिया है, इसे खास दृष्टि से बाँधकर नहीं रखा जा सकता।

एक साहित्यिक व्यक्तित्व के अतिरिक्त अक्कितम सच्चे अर्थों में गाँधीवादी, समाजसेवी, पत्रकार, पटकथा लेखक आदि रहे। इस तरह से देखा जाए तो अपने इतने लम्बे जीवन काल में उनके व्यक्तित्व ने जिस तरह से अनेकानेक स्वरूप और आयाम ग्रहण किए वह आमतौर पर दुर्लभ है। आठ वर्ष की उम्र में अपनी पहली कविता लिखकर ही उन्होंने मलयालम साहित्य में अपने पदार्पण की घोषणा कर दी थी। एक सुधारवादी और पुनर्जागरण आन्दोलन के लिए सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में उनकी छवि भी काफी पहले से ही स्पष्ट होने लगी थी। उनका साहित्यिक विस्तार कविता के अतिरिक्त कथा-साहित्य, नाटक, उपन्यास, अनुवाद आदि तक जाता है। भारतीय ज्ञानपीठ का 55वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार अक्कितम को मिलना न सिर्फ साहित्य का सम्मान है बल्कि साहित्यिक व्यक्तित्व के सरोकारी आयामों का भी सम्मान है।

भौतिक-आध्यात्मिक तत्त्वों के बीच विभाजक रेखा खींचने में भी मुझे दिलचस्पी नहीं—अक्कितम

भारतीय ज्ञानपीठ के 55वें पुरस्कार के लिए मेरा नाम चयनित हुआ है—यह जानकारी डॉ. प्रतिभा राय ने 2019 नवंबर अन्त में फोन पर दी थी। वह मेरे लिए अद्‌भुत और आनंद का मुहूर्त था। साथ-साथ मुझे कुछ अवसाद का भी अनुभव हुआ था। यह समाचार सुनते वक्त मेरी धर्मपत्नी मेरे साथ नहीं है। उसका जीवन मेरे साहित्यिक जीवन के लिए पूर्णत: समर्पित था। वर्ष 2019 मार्च में ही उसका स्वर्गवास हुआ था। मेरा हमेशा का अनुभव है कि हर्ष और विषाद जीवन में बारी-बारी से आते रहते हैं।

मैं अब 94 वर्ष की आयु से गुज़र रहा हूँ। कई व्यक्ति और घटनाओं की यादें मेरे मन में एक जुलूस के समान आ रही हैं। कई व्यक्तियों के स्नेह और सहयोग ने मुझे जीवन के इस बिन्दु पर पहुँचा दिया है।

मुझसे भी बड़े कई साहित्यकार मलयालम में हुए हैं। बी.टी. भट्टतिरिप्पाद और इटश्शेरी गोविंदन नायर मेरे गुरुवर रहे हैं। वे मुझसे भी महान साहित्यकार थे। उनको अप्राप्य रहा अंगीकार आज मुझे मिलता रहा है। मैं सोचता हूँ कि अपना आयुर्बल इसकी वजह है।

यह ज्ञानपीठ संस्था से मुझे मिलने वाला दूसरा पुरस्कार है। मूर्तिदेवी पुरस्कार मिलते वक्त मैंने सोच लिया था यह जीवन में मुझे मिलने वाला सबसे बड़ा पुरस्कार है। अब अप्रत्याशित रूप से ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला है।

केरल के दूर-दराज के एक गाँव कुमरनल्लूर में मेरा जन्म हुआ था। उधर ही पला-बढ़ा था। आज भी उसी गाँव में रहता हूँ। ऐसी स्थिति में इस प्रकार के एक पुरस्कार की प्रतीक्षा मैं कैसे कर सकूँगा? इस वरिष्ठ पुरस्कार के लिए मुझे चुनने वाले निर्णायक मंडल के सारे सदस्यों के प्रति मैं तहेदिल से आभार प्रकट करता हूँ।

मैं भविष्य में कवि बन जाऊँ—ऐसी कोई उम्मीद परिवारजनों के मन में नहीं थी। कवि बन जाना एक बड़ी बात है—ऐसी गलतफहमी भी कहीं थी। वैदिक ज्ञान की परंपरा वाले एक परिवार में मेरा जन्म हुआ था। मेरा जन्म गाँव, शहर के शोर-शराबे से कोसों दूर बसा है। बचपन में मुझे वेदों की शिक्षा मिली थी। वह परिवार जमीन-जायदाद तथा वेद शिक्षा देने में सीमित रहा था। मेरे पिताजी अक्कितम वासुदेवन नंपूदिरि ने कूड़ल्लर जाकर संस्कृत की पढ़ाई की थी। इसलिए उन्हें साहित्यिक अभिरुचि मिली थी। मुझे वेद के साथ संस्कृत और ज्योतिष में भी शिक्षा देने में वे बड़े इच्छुक थे।

माताजी भी मेरी अभिरुचि के परिमार्जन का निमित्त बन गयी थीं। मलयालम के भक्त कवि एषुत्तच्छन की कृतियाँ संध्या के अवसर पर वे खोलकर रखती थीं। वे उसकी पंक्तियाँ ताल-लय के साथ धीमे स्वर में पारायण किया करती थीं। मुझे देखते ही पास बिठाकर पारायण की पंक्तियाँ उँगली से दिखाया करती थीं। उँगली के आगे बढ़ने के अनुसार अक्षर देखकर पंक्तियाँ पढ़नी थीं। मेरी काव्याभिरुचि की और एक जड़ इस अनुभव से जुड़ा होगा। मैं अकेलेपन में पला बढ़ा बच्चा था। इसलिए अपकर्ष की भावना मेरी स्थायी साथी रही थी। अकेली रातों में एकदम विजन कोनों में मैं अंतरात्मा के अँधेरे भरी गहराइयों में उतर कर सिसक-सिसक कर रोया करता था। आज मुझे लगता है कि यही मेरी कविता का उद्‌भव स्रोत रहा होगा।

बचपन में चित्रकला में मुझे बड़ी दिलचस्पी थी। अप्रत्याशित रूप से वह रुचि कविता की ओर मुड़ गयी थी। मंदिर की दीवारों पर कुछ बच्चों ने कोयले से भद्दे-गंदे चित्र खींच लिए थे। यह देखकर मेरे मन में रोष उमड़ आया था। रोष-निमिष में मैंने कुछ पंक्तियाँ लिख डालीं।

मंदिर की दीवारों पर यों
मनमाने ढंग से चित्र खींचें तो
शक्तिशाली ईश्वर आकर
सर्वनाश करेगा।

ये पंक्तियाँ लिखते समय मैं महज़ आठ वर्षीय लड़का था। ये पंक्तियाँ देखकर मेरे साथियों ने कहा कि यह एक अच्छी कविता बनी है। तब मैंने पहली बार सोचा था कि क्या यह मेरी दिशा बनेगी ?

मैंने घर में रहकर वेद, संस्कृत तथा ज्योतिष सीख लिये थे। फिर मेरे गाँव के स्कूल के थैड फॉरम में मैं दाखिल हुआ। तभी पहली बार बाहर की दुनिया का अता-पता चला था। वह पढ़ाई इंटरमीडियट तक सीमित रही।

मेरी छात्रावस्था विचित्र थी। ग्रंथ पारायण, साहित्यिक संपर्क और सामाजिक संपर्क से वह आगे बढ़ी थी। यों कहें तो उसमें तनिक भी गलती नहीं होगी। महाकवि इटश्शेरी गोविंदन नायर, साहित्यकार-समाज सुधारक वी.टी. भट्टतिरिप्पाद के संपर्क में मैं आया था। वह संपर्क ही मेरा विश्वविद्यालय था। ऐसा कहना पूर्णत: सही होगा।

अगर उनका मार्गदर्शन न मिलता तो साहित्य के क्षेत्र में मैं कुछ भी प्राप्त न कर पाता। मनुष्य जीवन में कहाँ खोदने पर आँसू मिलेंगे यह सबक मुझे इटश्शेरी से मिला। वी.टी. भट्टतिरिप्पाद ने एक अलग बात सिखा दी याने साहित्यकार मनुष्य होने के साथ एक सामाजिक प्राणी भी है।

मैं पहले ही इस बात से अवगत हो गया था कि सामाजिक तथा राजनीतिक गतिविधियों से साहित्यकार कभी भी पूर्णत: अलग नहीं रह सकेगा। मेरे अपने समुदाय (नंपूदिरि जाति) में जम गयी बुराईयों के खिलाफ मैंने आवाज़ उठायी थी। मेरी आरंभकालीन कृतियों में यह विद्रोह-स्वर मुखरित हो उठा था। लेकिन जल्दी ही मैं एक बात समझ पाया। मानव हृदय को नज़र अन्दाज करके रचा गया साहित्य स्थायी महत्त्व नहीं रखेगा। वे क्षणिक यशोगीत ही रहेंगे। मैं अपना अन्त:करण किसी के सामने दाँव पर रखने के लिए तैयार नहीं था। अपने प्रति ईमानदारी रखनी है। यही सबसे बड़ा सत्य है। यह सोच कभी सही होगी या कभी गलत उसका अंतिम निर्णय समय को तय करने दें।

किशोरावस्था में कुछ समय मैं साम्यवादी विचारधारा से जुड़ गया था। उस समय मेरे सारे मित्र उस राजनीति के सहयात्री थे। उस विचारधारा के समर्थकों ने वर्ग संघर्ष पर बल दिया था। उनके साथ चलते समय भी मैं उस विचारधारा से पूर्णत: सहमत नहीं था। आर्थिक-सामाजिक क्षेत्रों में समता लाने की चाह उनके समान मेरे मन में भी प्रबल बन गयी थी। आज भी वह अभिलाषा मेरे मन में बनी रहती है। उसके पीछे एक खास वजह थी। ऋग्वेद के संवाद सूक्त में बताये गये एक भाग पर मेरा ध्यान टिक गया था।

''समानो मंत्रस्स्मानी समानं मनस्सह चित्तमेषाम''

इस सूक्त ने साम्यवादी विचार से मेरे मन को आकृष्ट कर लिया था। यह बात मैंने कई बार स्पष्ट कर ली है। किन्तु मैंने कभी भी उस दल में सदस्यता नहीं ली थी।

योगक्षेम सभा के प्रमुख नेता के रूप में ई.एम.एस. नम्बूदिरिप्पाद सेवारत थे। वे साम्यवाद के सैद्धांतिक आचार्य थे। तब उनके सचिव के रूप

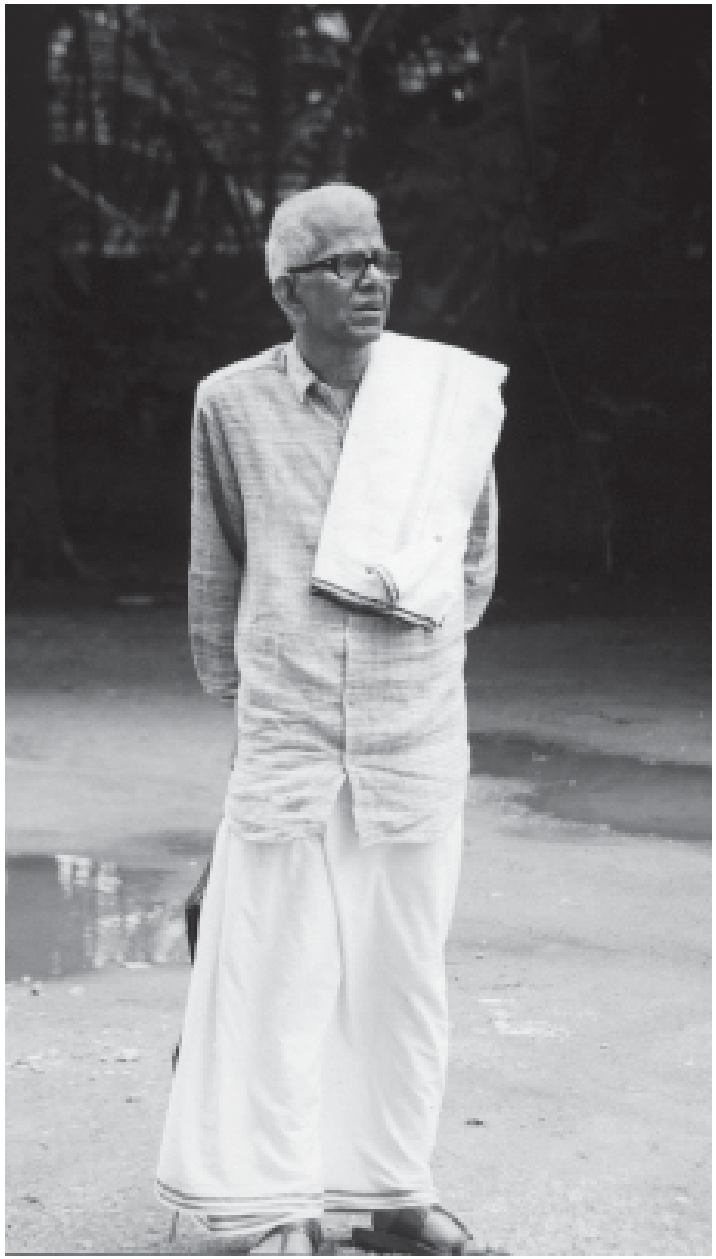

में मैंने काम किया था। लेकिन तब भी अपने चिंतन पर मैंने अंकुश नहीं डाला था। बीसवीं सदी का इतिहास काव्य इस वातावरण में लिख सका था। ऐसा मुझे लगता है। इसको आधार बनाकर कुछ लोगों ने मुझ पर प्रतिक्रियावादी की छाप लगायी। उस कृति प्रणयन के बारे में सोचकर आज तक मेरे मन में तनिक भी पश्चाताप नहीं है। साम्यवादी विचारधारा ने जीवन के एक मोड़ पर मुझे आकृष्ट कर लिया था। मेरे विकास में उसने बड़ी भूमिका निभायी थी। लेकिन साध्य के समान साधन भी पवित्र होना है, यह बोध हमेशा मेरे मन में प्रबल रहा है।

मेरे मन में एक संदेह पैदा होता है—क्या कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुँच पाता है ? लेकिन एक बात पर मैं आशान्वित हूँ। मार्ग जितना पवित्र बन जाता है उतना हम लक्ष्य के निकट पहुँच जाते हैं न ?

भौतिक-आध्यात्मिक तत्त्वों के बीच विभाजक रेखा खींचने में भी मुझे दिलचस्पी नहीं है। कदाचित् इस बोध ने साम्यवाद के हिंसा तत्त्व से अलग होकर चलने की मुझे प्रेरणा दी थी। बुद्ध और गाँधी के जरिए यह बोध मेरे मन में उतर आया है।

इसके पश्चात् मेरी कविता धीरे-धीरे भारतीय चिन्तनधारा की ओर उन्मुख होने लगी। भौतिक और आध्यात्मिक जीवन परिस्थितियों को मैं मानता हूँ। सत्य के सहस्र चेहरे होते हैं। इस विश्व के सारे तत्त्व परस्पर सहयोग से गतिशील होते हैं। तभी वे सबल और सुंदर प्रतीत होते हैं।

भौतिक और मानसिक सारे प्रकार के शोषणों का इसी कारण से मैं विरोध करता हूँ। सारे लोगों को काम मिलें उनके हाथ और जीभ पर जंजीर न पड़ें। बुद्धि और पेट भर जावें। ऐसे एक नवसंसार का सपना मैं भी देखता हूँ। फिर भी मेरी विनम्र बुद्धि में एक बात पनप उठती है। इन सारे लक्ष्यों की पूर्ति होने पर भी मानव मन को आनंद मिलने का समय नहीं आयेगा। क्षितिज कितना सुन्दर है! फिर भी बहुत दूर ही बसेगा। सिर्फ क्षमाशील आदमी के मन को चैन मिलेगा। याने सुख सच में दुख को ढकना है। दुख का सिर्फ एक प्रत्यौषध है— जहाँ स्नेह है वहाँ मनुष्य है।

फिर भी मेरे मानस में—मेरा जन्म क्यों हुआ—जैसे कुछ प्रश्न उभर आते हैं। उन प्रश्नों को विस्मय से देखना पड़ता है उन पर अनुसंधान करना पड़ता है। उस अनुसंधान की प्रक्रिया में मुझ में आत्मशुद्धीकरण की कामना पैदा होती है। उस प्रक्रिया में बेहद सुख मिलता है, बेहद दु:ख भी होता है।

वे तीव्र भाव मन में भावचित्रों के रूप में रूपग्रहण करते हैं। उन समग्र भावचित्रों को पुरावृत्त रूप भी कह सकते हैं। तब मन में संदेह आता है। अपने आप को तलाशने के लिए मैं कविता लिखता हूँ—ऐसा कहना उचित होगा न? आगे बढ़ते समय यह बात ढूँढ़ता हूँ कि मैं नहीं हूँ मेरा, तुम्हारा संयोग होता है या मेरे और तुम्हारे बगैर एक अलग तत्त्व है। उस पूर्ण ब्रह्म की खोज होगी न?

महर्षि अरविंद ने कहा था कि भविष्य की कविता मंत्र का रूप धारण करेगी। वह बात मुझे बहुत संगत लगती है। उनके शब्दों में—

I Spoke as one
Who would never speak again as a
dying man to a dying man

मेरा चरम लक्ष्य क्या होगा? जल्दी मिटने वाला यज्ञ या अर्थ की प्राप्ति? या इनसे परे कोई बड़ा तत्त्व?

उदात्त साहित्य की रचना कर पाने के लिए भागदौड़ की नहीं, मौन, की जरूरत पड़ती है, एकाग्रता और तपस्या आवश्यक है। औसत स्तर का जीवन बिताना कोई बुरी बात नहीं है। औसत स्तर के ऊपर मन विहार विचरण करें। तभी ऋषितुल्य उदात्त भाव की दिशा में कम-से-कम एक कदम आत्मवत्ता ऊपर उठेगी। वाल्ट विटमैन की उक्ति, पाठक से लेखक कहलवा सकेगा।

"He who touches this book touches a man"

विशेष उद्देश्य के साथ कविता नहीं लिख सकते। बगैर उद्देश्य के कम-से-कम एक शब्द कविता में नहीं है तो वह कृति कविता नहीं बनेगी। साहित्य का कोई लक्ष्य नहीं है—क्या यही इसका मतलब है? बिल्कुल नहीं। वह कविता की बात नहीं है। कवि को प्रेरणा देती प्रकृति को है। हम उसको अज्ञेयता पुकार सकते हैं। वह अज्ञेयता प्रत्यक्ष प्रकृति के अंर्तबार्ग में कहीं छिपा रहता है। कवि की अन्तश्चेतना को यह बात विदित होती है। इस अव्याखेय तत्त्व समझदारी की व्याख्या दूसरों को देनी है। यों समझा देने की प्रक्रिया का परिणाम है कविता।

इस आनंदानुभूति के सामने अतीत, वर्तमान और भविष्य नहीं है। वह नित्य सत्य है। इसलिए प्राचीन कविता और आधुनिक कविता जैसे व्यावहारिक प्रयोगों को इधर वैज्ञानिक सार्थकता लागू नहीं है। याने पुरानी कविता और आधुनिक कविता जैसे कोई भेद नहीं हैं। प्रभात, संध्या, चाँदनी, दोपहर की धूप के लिए नया-पुराना विशेषण लागू नहीं होता। कविता की भी स्थिति ऐसी है।

फिर भी सापेक्षिक अर्थ में नयी-पुरानी के विशेषण लगाकर कविता के बारे में बात कर सकते हैं। यह प्रणाली आज कायम है। किन्तु वह एक मौलिक सत्य नहीं है।

हाँ, यथार्थ कविता काल की सीमा का उल्लंघन करती है। कभी कभी उसमें समसामयिकता का अंश भी लयलीन होता है। एक दृष्टि से देखें तो समसामयिक अंश कविता को आस्वादक के हृदय में तुरन्त जगह देती है। मात्र समसामयिक अंश नहीं है, बल्कि स्थानीय अंश भी यह काम करता है। अपने युग से बातें न करने वाले कवि को अंगीकार नहीं मिलेगा—यही इस कथन के पीछे का अर्थ है।

मेरी सारी कविताएँ एक अर्थ में व्यक्ति और समाज को जोड़ती हैं। मेरा विश्वास है कि केरल के बीते दशकों का एक चित्र मेरी कविताएँ अनावृत करती हैं।

मैं मलयालम में लिखने वाला एक साहित्यकार हूँ। मलयालम के पाठकों के बारे में सोचकर ही मैं रचना करता हूँ। दूसरी भाषाओं की कविताएँ

तथा साहित्य भले ही मेरे लिए परिचित हैं, तथापि मेरी सोच और रचना ढंग पर उनका खास असर नहीं पड़ा है। मलयालम की पद्य कृतियों की धारा में मेरी कविता टिकी है। उसका नवीनीकरण कैसे संभव होगा, कैसे नये विश्व का आत्मसातीकरण उसमें संभव होगा, यही मेरा परीक्षण रहा है। इसलिए शब्द, संरचना, छंद आदि मेरे गाँव के भूगोल से मेरी कविता अटूट संबंध रखती है। केरल के अन्य भागों में रहते पाठकों को मेरी कविता के कुछ भावों को समझने के लिए अतिरिक्त कोशिश की जरूरत पड़ेगी। मलयालम की नयी कविताओं में यह अंश धीरे-धीरे नष्टप्राय: होता है— ऐसी स्थिति मैं देख रहा हूँ। क्या कविता मात्र एक व्यावहारिक धारा के रूप में बदल रही है ?

भले ही यह मेरी कविता की स्थिति है एक बात पर मैं गंभीरता से सोच रहा हूँ। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ऐसी वर्णमाला पर निर्भर रहने वाली सारी भाषाएँ संस्कृत ही है। देवनागरी लिपि का सहारा लेती हिन्दी सरीखी भाषाएँ आज संस्कृत के अत्यन्त निकट रहती हैं। विनोबाजी ने एक बात पर बल दिया था। देश की सारी भाषाएँ देवनागरी को अपनावें। यातायात और संचार विनिमय की रीतियों के सहारे बड़ी हद तक आज जनता एकता से जुड़ गयी है तब लिपि की विविधता हमारे लिए एक रोड़ा न बनें। उसको भी हटा सकेंगे तो विश्व को विस्मयचकित करते हुए हमारी एकता स्वयमेव मज़बूत बन जायेगी।

मैं हमेशा सोचता हूँ कि आगे मैं नहीं लिखूँगा। श्रीमद्भागवतम के अनुवाद के बाद मैंने विशेष कुछ नहीं लिखा है। अपनी पूर्ववर्ती रचनाओं को आज पढ़ता हूँ मैं खुद पूछता हूँ—क्या ये सारी कृतियाँ मैंने ही लिखी थीं। इस अनुभव के बलबूते मैंने कई पूर्व प्रसंगों में कहा था— मेरे अन्दर बैठा एक दूसरा आदमी ये सब लिखता है। सच्चाई यह है कि वह दूसरा आदमी मेरी इच्छा के अधीन रहकर लिख रहा है।

मेरे सामने हमेशा एक प्रश्न उठता है—मन की घुटन से मुझे कैसे मुक्ति मिलेगी ? हाँ सबसे बड़े सत्य से सबसे बड़ा सौन्दर्य उपजता है। वही मनुष्य के धर्म के रूप में बदल जाता है।

कई सालों के पहले मैंने एक वाक्य लिखा था—सारे साहित्यकार सोचते हैं कि उनको वह कीर्ति नहीं मिलती है, जिसके लिए वे लायक हैं। हाँ, मेरे मन में भी यह विचार आया है। उनको वह कीर्ति आज या कल मिलेगी ही, यही मेरा अनुमान है। मैं अपनी बात कहूँगा। एक दिन सुबह जाग उठते वक्त सौभाग्य मेरे सिर पर पटक गया है, ऐसा अनुभव कभी मेरे जीवन में नहीं हुआ। सौभाग्य यों पटक जाय इस विचार से मैं उसके तले में खड़ा हो गया था, यह बात खुलकर कहने में मुझे तनिक भी संकोच नहीं है। एक बात जोड़ना भी चाहता हूँ। जिन उपलब्धियों की प्रतीक्षा की थी, उनमें से अधिकांश मुझे मिली हैं। बगैर प्रतीक्षा के रहते समय ये उपलब्धियाँ मिली हैं। इसके फलस्वरूप सारी कामनाओं के फलीभूत होने का आनंद मुझे मिल रहा है। 94 वर्ष की आयु में प्राप्त ज्ञानपीठ पुरस्कार के बारे में भी और क्या कहना है !

ज्ञानपीठ पुरस्कृत कई साहित्यकारों के निकट संपर्क में आने का सौभाग्य मुझे मिला है। अली सरदार जाफरी, अमृता प्रीतम, उमाशंकर जोशी, अखिलन और अनंतमूर्ति मेरे घनिष्ठ मित्र थे।

उमाशंकर जोशी और मैं एक ही साल के साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता थे। एक ही मंच से हमने वह पुरस्कार स्वीकार किया था। अहमदाबाद के उनके घर जाकर उनका आतिथ्य मैंने स्वीकार किया था। वह स्वागत सत्कार बहुत हृदयस्पर्शी था। हम दोनों पत्र व्यवहार करते रहे, ये सब आज मधुर स्मृतियाँ हैं। मलयालम में पाँच साहित्यकार इसके पहले ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हुए हैं। उस सूची में आज मेरा नाम भी शामिल किया जा रहा है। वे पूर्ववर्ती विजेता मेरे लिये अत्यन्त प्रिय रहे हैं। इन लेखकों के साथ मेरा नाम भी दर्ज करते समय मुझे पूरा विश्वास नहीं हो रहा है। उस अविश्वास के साथ मैं यह पुरस्कार बड़े हर्ष के साथ स्वीकार कर रहा हूँ।

कालिदास की दो पंक्तियाँ हमेशा मेरा पीछा करती रहती हैं।

मरणं प्रकृति शरीराणाम
विकृतिरज्जीवित मूल्यते बुधै।

60 वर्ष की आयु से लेकर अब 94 वर्ष की आयु तक की बात है। सुबह जाग उठते समय उस श्लोक का उत्तरार्ध मुझे प्रबुद्ध बनाता है।

क्षणमव्यतिष्ठतेश्वंसन
यदि जंतुन्ननु लाभवानसौ

सबको मेरा हार्दिक आभार।

अनु. : डॉ. आरसु

अक्कितम की चुनी हुई कविताएँ

अनुवाद : डॉ. आरसू

हाथ का आँवला

बोल सखी, क्या सुना तूने
मेरे मुँह से इस युग की चीख ?
बोल सखी, क्या देखा तूने
मेरी आँखों में इस युग की कुरूप दारुण छाया ?
बोल सखी, क्या तूझे महसूस हुआ
इस युग की बदबू मेरी श्वास में ?
बोल सखी, क्या तेरी छाती ने पहचानी
इस युग का विफोट मेरी नसों में
बोल सखी, क्या चखा तूने
इस युग का कड़वापन मेरे अधरों में ?

तो मैं क्यों चुप रहूँ उस
भीषण यथार्थ रहस्य अब भी ?
गृभणामिते सौभगत्वाथा हस्त
रटा था मैंने यह मंत्र
पाणिग्रहण किया था तूने मेरा
तर गया था मेरा तन स्वेद से !
फूल सा कोमल तेरे
जीवन के मृदुल दलों में
अनजाने मैंने नाख़ून से
कुरेद डाला प्रलोभन में।

वह स्वेद है आज भी मेरी
आत्मशक्ति में बन मोती किरीट
उज्ज्वल प्रभा चमक उठती है
तीव्र बोधांधकार में
अगर न मिलता वह आशीर्वाद
अतीत दु:ख से कहना पड़ता :
गृभणामी श्लोक आलाप कर
तेरा हाथ पकड़ा पुरुष
कोई भी अमूल्य स्यमतंक रत्न
कोई भी अपूर्व सौगंधिक पुष्प
प्राप्त करने की ढींग मार
मूर्खता से क्वचित पुरुष
सौ बार चिता में जल राख बन
खड़ा है तेरे सामने
उन दिनों का गाना आज
मैं गा न सकता
तब बताया हास्य आज
पेश करने की पटुता आज

खो बैठा हूँ मैं प्रिये
आज आँसु निस्पंद हैं
आँख से थाह लेता हूँ मैं बातें स्पष्ट
मेरी हथेली में रखे आँवला सा
लगता है पूरा संसार
यह छोटा-सा फल दाबना
दाँत से ज़रा काटना
यह छोटा फल काटना
सब मुश्किल है अब मुझे

सच है मापा होना मैंने
एक कदम में मैंने पूरा संसार
आचमन किया होगा मैंने
सागर भर का पानी एक चुल्लू में
फिर भी सीख, निशाहीन
लाल लाल अंगारे बरसते सूर्य में
बगैर हवा को शून्याकाश में
विप्रवास के दुःख में
जल गया मेरा प्राणहीन शरीर
बन गया कितना कुरूप
मात्र अवगत हूँ मैं बात से।

राख बने मेरे कर्मकांडों में
कौन कौन सा तत्त्व
बना देता है मुझे धीर कहूँ?
तेरा रूप, रंग, स्वर
सुगंध बरसाता केश
हर दिन तुझ में खिला उठता
अनाद्यंत धन्य चैतन्य, नव्यप्रभात
तेरी थकान तेरे अश्रुकण
फिर तेरा पावन प्रार्थना भाव!

चक्र

घूमता रहता है सदा
विद्युन्मय चक्र एक
विजय के हाथों में
एक क्षण भी रुकने का
नाम नहीं लेता वह
किसी को याद नहीं है
उसके रुकने की बात
कुछ लोगों को होती है
आँख के भीतर एक आँख
बताते हैं ऐसे लोग
भले ही गोलाकार होते हैं
घूमते वक्त यह चक्र
लेकिन घूमना जब बन्द होगा
बनेगा उसका आकार चौकोर।

धर्मसूर्य

अगर देता है कोई तुझे
प्यास में एक घूँट पानी
करना है तुझे उसका
सत्कार प्रीति भोज से।

अगर देता है कोई तुझे
निष्कलंक मुस्कान
करना है तुझे उसका
नमन पैरों पड़कर।

अगर बचाता है कोई
खतरे में तेरा जीवन

मर मिटना है तुझे
उसे देने प्राण।

करता है अक्लमंद
गुण मन, कर्म से
दस गुना गुण भी
होगा कम साथी को।

देते हैं महात्मा
भलाई आदर समेत
बुराई के बदले
श्रेष्ठ ये आदर्श।

करमचंद ने सीखी थीं
बचपन में ये पंक्तियाँ
मातृभाषा की यह कविता
लगी थी मोहन को मोहक।

फिर बन गया
वह उत्सुक
करता रहा परीक्षण
जीवन में निरंतर।
चकित हो उठा काल
आगे बढ़ा करम चन्द
बन गया महात्मा
दिन ब दिन।

खुद बोल उठा युग
यह धर्मसूर्य है न?
काश! हम नहीं करते
काल में प्रयोग।

भटकते हैं हम
दो पैरों से
अहंकार से
अंधेरे में हरदम!

लय

वह गायक रहा भूखा
लगातार एक हफ्ते तक
गाने को नहीं मिला निमंत्रण उसे
अलापने के लिये गाना।
लेकिन गा रहा था वह
रहते समय अपनी झोपड़ी में
जब होता था अकेला
पूरा विश्व सोता था आधी रात में।
जीवन मुक्ति के शिखरों पर
उड़ आयी थी उसकी आवाज़
पौ फटने तक चैन से
सो गया वह गिरने पर।
आया आठवाँ दिन सुबह
दरवाज़ा खोलते वक्त
देखा उसने खड़ा है सामने
एक आराधक मुस्कराते हुए।
कहा उसने गायक से
आज रात को मेरे गाँव के मंच पर
आइये आप सुनाने को गाना
राह खर्च देने के लिए आगे बढ़ा हाथ।
बोला गायक—आऊँगा मैं
आपके गाँव में साँझ को
पैसा हाथ में रख देना

जब गाना मेरा पूरा होगा।
अनुरोध किया उसने
रखिये यह अपने पास
बन्द हो गया वह द्वार
वह कान भी उसी प्रकार।
कृतार्थ था गायक
किन्तु हताशा भी थी मन में
खिलते ही झड़ते
कोमल फूल सा।
लौट आया संदेशवाहक
अब अपने गाँव।
प्रश्नकर्ताओं को दिया उत्तर
हुई थी भले ही कुछ हिचक।
आयेगा वह बोला अपने
गाँववालों से कृत्रिम उत्साह से।
पहुँच गया गायक गाँव में
ठीक समय पर संध्या तक।
इकट्ठे हुए गाँव वाले सहस्र
देखते रहे अपलक
प्रज्वलित थे कई दीपक
चमक उठा था मंच।
नम होकर बैठ गया गंधर्व गायक
वाद्योपकरण वादक के सामने।
दाढ़ी नहीं बनायी थी
नहाया नहीं था एक हफ्ते तक
पहना था चिथड़ा
आती है बदबू उससे।
देखने में कंकाल
नसें उभरी खड़ी हैं
खड़ा हो गया कुछ समय बाद
खोला अपना दिव्य मुँह गायक ने
गाने लगा तो जड़-चेतन
सब स्तब्ध रहे कुछ भी
न हिला न डुला सभी गति शांत।
आसमान की नीलिमा भी जुड़ी
लाख आँखें खुल गयीं
आत्म विस्मृत थे सब
बहने लगे अश्रुकण आनंद के।
अचानक गायक ने वमन किया
खून आया मुँह से
गिर पड़ा कालीन पर
आँख बन गयी निश्चल
मुँह बन गया वक्र।
किसी की नज़र नहीं पड़ी
गायक की बुरी हालत
श्रोतागण पहले ही
पहले ही मृत है न?
सभा का एलान था
गायेगा वह आखिरी पल्लवी भी
इसके बाद ही बंद करेगा कंठ
सकपका गये सब इस वक्त
''शव से आती है न बदबू?
क्या मरने के बाद भी
क्या तू गा रहा था गायक?''

□

Akkitham Achyuthan Nambudiri

Bhaskaramenon Krishnakumar

Man as I am,
Even my breasts swelled up
And flowed towards all living beings

This is quintessential Akkitham. Love towards all things great and small has remained his ideal. After all he was barely twenty-five when he wrote:

Absolute love would,
In course of time, turn into strength.
This is beauty, this alone is truth
And practising it one's utmost duty.

Many are such revelations in Akkitham's poetry. But Akkitham avers that he never consciously strived for such insights, they always visited him. Indeed, he claims it is not he who writes, but someone within. No wonder, his poetic career spanning over seventy years is not easy to evaluate.

Akkitham is his family name. There were no issues in this ancient family of Vedic scholars and he was born as a result of propitiating many gods. He was named Achyuthan. Patriarchs of the family naturally wished that Achyuthan would turn into a great Vedic scholar. When he was eight, he was initiated by his father into learning Rgveda. Amazingly, he started writing Malayalam shlokas in Sanskrit metres around that time. But his heart lay in sketching and painting - a skill he would put to great advantage in his writing later. He joined the college after passing the matriculation examination, but could not continue his studies further.

Poetry sustained him all through these years. But it was his meeting with the legendary poet Edasseri Govindan Nair (1906 - 74) that gave a new direction to his poetic pursuits. Akkitham gratefully regards Edasseri as his mentor and maintains that it was Edasseri's ruthless tutoring that helped him grow as a poet. His first collection of poems came out in 1946. Three years later he got married; he celebrated the event with another book of poems.

Predictably, he started writing against the evil practices of his community with a reformatory zeal. Those were the days when communist ideology was taking roots in Kerala. E.M.S. Namboodiripad, with whom he had long-standing familial ties, was writing primers on socialism and communism. Akkitham was initially drawn to communism by these writings. But, curiously, it was the Rgveda that reaffirmed his faith in communism. Akkitham asserts that the Samvaada Sookta of Rgveda which talks about the communion of minds is proto-communist literature. He turned a fellow traveller and remained so for nearly seven years - 1943 to 1949.

Akkitham had by then established himself as a poet of repute. He had published many books of poems including a narrative poem depicting the story of an agrarian struggle - "The Wet Clod". Wet by the blood of agricultural labourers

shot dead by the police. He was also well known as a social activist. It was easy to graduate from Samvaada Sookta to communism. But it was difficult to come to terms with the theory of class war. Gandhi's hold on him was too great to be shaken off and would not allow a continuing relationship with the communist party, which, anyway, was very ambiguous; he never became an official member. "I couldn't make myself believe that the purpose of my life was to become a member of the party founded by V.I.Lenin." Probably it was the Calcutta Thesis calling for armed revolution which settled the issue for him. Probably it was the death of his firstborn which turned him towards spirituality. He chose to publicly recant his faith in communism. Initially he wrote three stanzas and thought it was all over:

As I shed a teardrop for others,
There arise within me a thousand suns.
As I expend a smile for others,
Shines within me a full moon, eternal and serene.
I never knew of this heavenly bliss before;
Lamenting over that great loss again and again, I weep.

These stanzas now preface the poem, "The Epic of the Twentieth Century", just short of eight hundred lines in length in the epic metre, divided into four cantos. Written as the confession of a repentant communist, Akkitham waited for many months before he sent it to press. Finally, it was at the behest of Edasseri that he published it in the premier journal *Mathrubhumi* in August 1952. That was the time many intellectuals all over the world - André Gide, Arthur Koestler and Stephen Spender, to name a few - were talking about the "God that Failed". Here was Akkitham independently esssaying on the basic impiety of communism.

Arguably, "Epic" is the first major poem in Malayalam which was opposed on political terms. And what is generally true of classics, applies to "Epic" as well - it is hardly read in its entirety. Again, as in the case of many classics, some couplets tend to outshadow and outweigh the poem itself. Here is one such:

Sobbing, I told this to the future citizen -
"Light, O young one! is sorrow;

Darkness is pleasurable".

Arguably again, this is one of the most quoted couplets from modern Malayalam poetry. It would appear as though it has flown away from its appointed space in the poem and perched itself in totally different discursive spheres. Ranging from everyday speech to political cartoons, gaining in contra-signification. For the poet's detractors it has come in handy as a stick to beat him with, as an evidence of his alleged

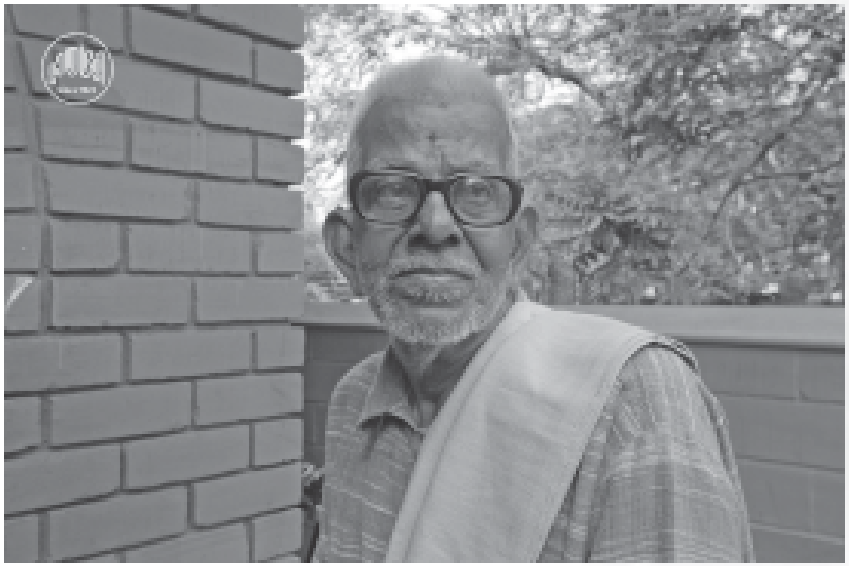

regressive socio-political stance. Acquiring the status of an aphorism, it has now become the bane of the poet, dubbing him as an "enemy of the people"!

But Akkitham was primarily concerned about these people, people who unsuspectingly fell victims to the designs of the communist party and its leaders. People who laid down their lives in the "war of liberation". He was basically opposed to the inherent element of violence. Vengefulness, he asserted, cannot ever give birth to peace and happiness. Akkitham believes that, over the last fifty years, ground realities of international polity have proved him right and that the poem has gained in eternal relevance.

It is not just with the red flag and the rosary beads that Akkitham tussled. The disparateness of what he learnt by rote and what he actually confronted - "With the mouth that chanted the Vedic hymns, I was made to swallow/nauseating fish and meat", - the irreconcilable value systems of the village and the city - "The city throbbing all around/turned me into another being, even as I refused to budge" - such opposites are strewn all over his poetry which lend an ever-abiding tension to his poetry and enlarge its spectrum. How he metamorphosed from the assertion, "My tongue shall henceforth chant no names of Gods" to the exhortation, "Tongue! ruthlessly fill the barrenness of skies with God's names" has to be seen to be believed. So

is the way he untiringly tries to link ancient Indian wisdom to modern science and technology - regardless of the "revivalist" abuses showered on him.

Indeed he unabashedly pleads for the revival of the Indian Kaliyuga calendar, a unified Devanagari script for all Indian languages and the resurrection of Sanskrit. Tradition, for him, is no fossil; it needs to be purposefully integrated into the modern times. So is it with the poetic tradition. In one of the finest poems written in Malayalam on Kalidasa, "The Eternal Cloud", he seeks to redefine the role of tradition. In numerous poems he problematises the dichotomy between faith and reason - Why wear the sacred thread? What signifies a Brahmin? Talking of Brahminism, Akkitham approached the problem of removing untouchability more as the consummation of his all-encompassing love than as a social reformation measure. He wrote about the untouchables not on account of a need to be politically correct but because of his spiritual communion with them. He would be in the forefront of organizing yagas; but would not swerve from the ideal of popularizing Vedic studies among non-Brahmins. Even the stupendous work of translating the Bhagavata into Malayalam was aimed at making it intelligible to all. Culture is no reserve forest for him.

Sex, parenthood, family-every aspect of life is a cause for celebration in Akkitham's poetry. He embraces both the farmer's slang and the heightened Sanskritised poetic diction of the Vedas. Both folk tunes and intricate Sanskrit metres occur to him naturally. So do sonnets and Muktakas (independent shlokas). Some of the finest children's verse in Malayalam is written by Akkitham. So will you find some of the best allegoric contemplative poetry in his oeuvre. Judge him in terms of verbal felicity, ease and abundance or by the parameters of copiousness, variety and subtlety, Akkitham

would score on all counts. But his fame does not rest not on these accomplishments. Most likely it would rest on the limitless compassion reflecting in his poems - compassion for children, compassion for the disabled, compassion for the underprivileged.

Tears of this compassion irrigate his poetic landscape. Indeed the teardrop, around which he has woven new myths, is a major motif of his poetry. Tears are nothing but lifegiving water. Water, and not fire, is Akkitham's basic element. It cannot be otherwise with a poet who wrote about the failure of a much acclaimed revolution.

The Epic of the Twentieth Century

Bhaskaramenon Krishnakumar

Richard Crossman, the editor of The *God that Failed* (1949) reminisces about a heated argument with Arthur Koestler out of which that book was born. It was agreed that Koestler would narrate exactly what happened when he joined the party, not what he felt later. It is impossible to relive the past; hence every writer should, by an act of imaginative self-analysis, recreate it, recollecting the past in dispassion if not in tranquility, describing it emotionally. But in actuality, none of the six writers could achieve this ideal position. The experiential trace remains forever and forms part of the consciousness which tries to recollect the past. Its inescapable "presence" colours, subverts and deconstructs the experience. Probably it is worthwhile to begin with this caveat as we talk of the poem, "The Epic of the Twentieth Century".

One might also begin by saying that this was the first major long poem in Malayalam which was opposed on political terms. Not that earlier there weren't any poems which spoke against communism. Changampuzha in 1944 in "The Singing Devil" satirized the communists to no end. Indeed, the poem bordered on nihilism. But for reasons literary as well as extraliterary, the poet was more or less spared. "The Epic" appeared in August 1952 in the premier Malayalam literary journal *Mathrubhumi* - in one go, hardly filling three pages in close print. That Edasseri, the one who wrote "The Strike" and "The New Cooking Pot and the Sickle" was behind the publication of the "Epic" is a matter of interest to future literary historians.

It is also interesting to note now that more than one critic had hailed Akkitham as a true revolutionary! As a matter of fact, they were urging him to tone down his revolutionary fervour. As was the case with many others of his generation, Akkitham began his literary career writing against the evil practices of his community. The dream of an egalitarian, classless society was only a step away. "Epic" is all about how that dream withered.

It is a first person narrative, confessional in nature. One might even say that it is confessional poetry at its best. But then it does not speak of things past as they seemed in the past, but as they seem to the narrator in the present. Hence the caveat about the experiential trace.

The rest of the poem is divided into four cantos - titled the Heaven, Hell, Hades and Earth respectively. It is the autobiography of the narrator. The poem gains in importance because it affords a common space for autobiography and socio-political history. The first canto, Heaven, is all about his childhood; the shortest of all and aptly so. "I look back upon

the earth which I trampled".

Even I had a past replete with happiness. A childhood full of mirth, pranks, stories and star-gazing. Suns would not rise any more with the same radiance. Moons would not beam the same rapturous delight any more. Life made of lustrous rays and splints of rainbow, life which made possible a heaven on earth is all over.

The second canto is all about how this angelic child was transformed into a veritable devil. Akkitham has documented that the design of the poem was determined by the third stanza. It reads -

If the earth is round,
One is sure to reach the other side digging.

The metaphor of "the other side" stuck. If one could reach the other side of this vast earth, one could as well narrate the other side of the story. This side of the story begins with the Darwinian origin of species, talks of the idea of freedom, the inexorability of fate and of course, the ascent of man. Man who tamed even the atomic power, enslaves his own fellowmen.

The weary peasant bends over the plough and stirs;
His silhouette has stuck to my mind.
His sighs the paddy leaves;
And the blood drops of his eyes, the grains.
The day I knew it wasn't he who ate the grains
The moon within me died.

Workmen wind their sinews
Around the blood-sucking fangs
Of smoky gargantuan machines.
And from their mouths come forth
Seamless, furry silken robes.
The day I knew it wasn't the workmen
Who warmed up the winters with those robes,
My life turned into a nightmare.

The poem then moves on to describe in detail the promiscuity of the young men.

On the wayside
Crows peck at a dead woman's eyes;
A new born baby suckles at her breasts.

Young women weren't any different. They go after the servants of the household, give birth to bastards and abandon them in the gutters.

Sobbing, I told this to the future citizen
"Light, O young one! is sorrow.
Darkness is pleasurable."

"Hades" is the narrator baring it all. He recounts how he avenged all those unjust acts of cruelty against the poor. He shed kindness, love and all his instinctive urge for creativity, individual freedom and religious faith. Landlords, capitalists, middle class people, clerks, peasants longing for private property, artists, scientists and intellectuals, labourers who are not on our side - all these people are our enemies belonging to the class of bourgeoisie and petty bourgeoisie. We are in the vanguard of the battle for the downtrodden. Our enemies will never have the power to sympathise with the have-nots nor will they have any sense of dedication. It is wrong to be kind to them. He then went on to train young

people how to bring about an egalitarian world.

At the outset,
I gave the milk of human kindness, as they could digest.
In course of time, I added a little malevolence to it.
And finally with a secret smile, I got rid of the milk.

The training was so successful that the initiates started arguing "Malevolence is the right and benign means". And they went all over to wage the battle for liberation - rallies, speeches exhorting armed struggle, mounting offensive against the police and what not. He himself went into hiding. It turned out to be a civil war and many children, women and old people sacrificed their lives.

A shroud of darkness fell over his being. Unending

wailing of people raged in his ears. Human skulls were strewn all over his path. And in his dreams, he saw ghosts without heads and limbs, their eyes pierced, ears cut off. A sense of remorse overtook him.

The last canto titled "The Earth" is the expression of this unqualified remorse. He apostrophises all those young men who trusted him and laid down their lives for the revolution. He realises that an ideal of revenge cannot ever bring about happiness. If one should cleanse the earth of its injustice, he first needs to cleanse himself of his sins.

Absolute love would,
In course of time, turn into strength.
This is beauty, this alone is truth
And practising it one's utmost duty.

This in brief is what "Epic" is. Why then was it denounced by many? The poet himself admits that at the time of publication, that is, in 1952, he feared a backlash. But, as far as we know, there wasn't any serious attempt in the next few years to look at the poem either as a political document or as a poem of literary importance/worth.

When it really descended, there were two major objections: (i) it is a bourgeoisie reaction to the ideal of revolution and (ii) it derides the working class as unclean, ill-bred, boorish and vulgar.

The first objection primarily stems from the fact that the narrator of the poem, in the end, speaks against an armed uprising and prescribes absolute love as the panacea for all the ills of the world. An extension of the argument spills over as a distortion of the poem that the poet advocates a truce between the two warring classes. This is certainly not true. If anything, the poem advocates that the propagation of the idea of class divide is one of the root causes. The criticism does not look at the emotional history of the narrator as given in the poem - how he took up arms and why he turned away from it.

The second objection has some merit in it. Here is an unmistakable derisive tone in the words picturising the self-appointed leader of revolution. That part of it was self-reflexive and directed towards the narrator himself has been lost

sight of. Nevertheless there is an element of culpable exaggeration in saying that the erstwhile communist leaders were all Bohemian and hedonistic - the culpability stemming as much from historical inaccuracy as it does from lack of aesthetic inevitability. It does in some measure, give credence to the argument that the poem is, to that extent, partisan. In other words, it detracts from the worth of the poem. Dispassion would indeed have heightened its internal tension.

There was yet another objection - that it is a quid pro quo to American imperialism. It is not opportune to discuss the correctness or otherwise of the allegation here. Suffice to say it is historically untrue.

Confession, penitence and atonement are spread over this poem overlapping each other. The entire field of the poem is irrigated by the tears of the narrator. This teardrop is the hallmark of Akkitham's poetry spanning over seventy years. And invariably, it is shed for another weeping soul.

Some Poems by Akkitham

Translated by **Bhaskaramenon Krishnakumar**

The Ultimate Anguish

Yesternight I stood in the glistening moonlight,
All alone, forgetting myself.
I burst into tears and screamed aloud;
The galaxies trembled all of a sudden.

Nightingales did not enquire why;
Nor did the night breeze wipe away my sweat.
The tree beside did not drop even a single leaf;
The world did not know a thing.

The grass beneath my feet did not even quiver;
Nor did I tell this to anyone.
How do I relate to others
What I myself cannot comprehend?

Essence of the Gita

Guru Chaitanya,
On a pilgrimage to South India,
Witnessed this wondrous sight.
One reading the Gita and
Another beside him in tears,
Listening intently.

Are you able to make out the
Essence of the Gita in its entirety,
Asked the pilgrim.

"No, not a word, my Lord",
Replied the listener.

Then why these tears,
As Chaitanya wondered,
Clarified the listener-

"I see the chariot in front;
Krishna on the deck is speaking to Arjuna, don't know what.
And tears well up in my eyes."

Time for Giggles

Water is scarce;
Dripping drop by drop from the tap.
How long will it take to fill the pot!
Let's sit by this culvert for some time.
Watching the vehicles that pass by
Raising dust in the golden sun;
Let's sit here cracking jokes.

What do you think?
Of late I realized this within.
O dear! In youth we tend to giggle for no reason.

As I brush my teeth in the morning,
As I feed the cows,
As I spill hot coffee and burn my wrist,
As I squat and scrub the floors till my hip aches,
As grandma scolds me for not lighting the lamp,
Or even as I wake up from a nightmare
And gasp for breath with fear,
O dear! I tend to giggle for no reason!

At last I realized it; isn't it true?
In youth we tend to giggle for no reason.

O dear! In the bustle of chatter
I forgot all about it.
It's long since my pot is overflowed!

Jeevo Brahmaiva

Father knows the entire Brahmasutra by heart.
But if the electric torch doesn't work,
He starts fumbling.

His son takes that torch
And runs his teeny fingers over the switch and the bulb.
And lo! The torch shines again!

Once he touches,
The conked out radio starts singing;
And the hands of the dead timepiece start moving.

Father closes his eyes with a tearful smile.
Within him squats Adi Sankara;
He whispers in the ears of the father hugging the son-

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या
जीवो ब्रह्मैव नापरः ।

The Wheel

In the hands of victory
Revolves a dazzling wheel.
No one remembers seeing it at rest,
even for a moment.
But those with an eye within the eye,
keep saying this--
" Though circular whilst in motion,
This wheel is but a square at rest"

ब्रिटेन की तत्कालीन प्रधानमन्त्री मारग्रेट थैचर से वर्ष 1982 का ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहण करते हुए हिन्दी साहित्यकार महादेवी वर्मा

तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री पी.वी. नरसिंहा राव से वर्ष 1992 का ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्रीनरेश मेहता

ज्ञानपीठ पुरस्कार

22 मई, 1961 को भारतीय ज्ञानपीठ के संस्थापक श्री साहू शान्ति प्रसाद जैन के पचासवें जन्मदिन के अवसर पर उनके परिवार के सदस्यों के मन में यह विचार आया कि साहित्यिक या सांस्कृतिक क्षेत्र में किसी ऐसी महत्त्वपूर्ण योजना का प्रवर्त्तन किया जाए जो राष्ट्रीय गौरव तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिमान के अनुरूप हो। इस विचार के अनुसरण में 16 सितम्बर, 1961 को जब भारतीय ज्ञानपीठ के न्यासि-मंडल की बैठक में अन्यान्य भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने के उद्देश्य से स्थापित राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला पर विचार चल रहा था, तब ज्ञानपीठ की संस्थापक अध्यक्ष श्रीमती रमा जैन ने यह प्रश्न उठाया कि क्या यह सम्भव है कि हम भारतीय भाषाओं में प्रकाशित रचनाओं में से सर्वश्रेष्ठ पुस्तक चुन सकें जिसे एक वृहत् पुरस्कार दिया जाए?

इस विचार को व्यावहारिक रूप देने की पहल भी श्रीमती रमा जैन ने की। उन्होंने इसके लिए कुछ साहित्यकारों को 22 नवम्बर, 1961 को कोलकाता में अपने निवास पर आमन्त्रित किया। सर्वश्री काका कालेलकर, हरिवंशराय 'बच्चन', रामधारी सिंह 'दिनकर', जैनेन्द्र कुमार, जगदीशचन्द्र माथुर, प्रभाकर माचवे, अक्षय कुमार जैन और लक्ष्मीचन्द्र जैन ने इस परिकल्पना के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया। दो दिन बाद साहू शान्ति प्रसाद जैन ने तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के समक्ष इस योजना का प्रारम्भिक रूप प्रस्तुत किया, जिन्होंने इसकी सराहना की और इसके कार्यान्वयन में सहयोग का आश्वासन दिया।

इसके बाद विभिन्न भाषाओं के साहित्यकारों से विचार-विमर्श हुआ।

Jnanpith Award

On 22 May, 1961, the fiftieth birthday of Sahu Shanti Prasad Jain, the founder of Bharatiya Jnanpith, members of his family thought that some unique scheme, commanding national prestige and of international standard, should be started in literary and cultural field. Consequently, when on 16 September, 1961, the Board of Trustees was considering matters relating to the 'Rashtrabharati Granthamala', which brings out Hindi translations of outstanding works of other Indian languages, Smt. Rama Jain, the Founder President of the Jnanpith, queried whether it was possible to select the best book out of the publications in Indian languages for a big award.

A discussion on the question was initiated by Smt. Rama Jain herself when she invited some of the leading litterateurs at her residence in Kolkata on 22 November, 1961. Kaka Kalelkar, Harivansh Rai 'Bachchan', Ramdhari Singh 'Dinkar', Jainendra Kumar, Jagdish Chandra Mathur, Prabhakar Machwe, Akshaya Kumar Jain and Lakshmi Chandra Jain discussed various aspects of the idea. Two days later, a primary plan was presented by Sahu Shanti Prasad Jain to Dr. Rajendra Prasad, the President of India, who liked the idea greatly and promised to help in its implementation.

The idea was then discussed with writers of different languages. Eminent Bangla writers and critics of Calcutta discussed it on 6

दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला से वर्ष 1996 का ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहण करते हुए बांग्ला साहित्यकार महाश्वेता देवी

तत्कालीन प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयी से वर्ष 1997 का ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहण करते हुए उर्दू साहित्यकार अली सरदार जाफ़री

6 दिसम्बर, 1961 को कोलकाता के प्रमुख बांग्ला साहित्यकारों और समीक्षकों ने भी इस पुरस्कार-योजना पर विचार-विनिमय किया। 1 जनवरी, 1962 को कोलकाता में अखिल भारतीय गुजराती साहित्य परिषद् और भारतीय भाषा परिषद् के वार्षिक अधिवेशनों में भाग लेने वाले 72 साहित्यकारों से सम्मिलित रूप से परामर्श किया गया। इसी बीच योजना के प्रारूप की लगभग चार हजार प्रतियाँ देश की विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं और साहित्यकारों को उनकी प्रतिक्रिया जानने के लिए भेजी गयीं।

योजना को अन्तिम रूप देने के लिए 2 अप्रैल, 1962 को दिल्ली में भारतीय ज्ञानपीठ और टाइम्स ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्त्वावधान में एक वृहद् विचार-गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें देश की सभी भाषाओं के लगभग 300 मूर्धन्य साहित्यकारों ने भाग लिया। इसके दो सत्रों की अध्यक्षता डॉ. वी. राघवन् और श्री भगवतीचरण वर्मा ने की और इसका संचालन डॉ. धर्मवीर भारती ने किया। सर्वश्री काका कालेलकर, हरेकृष्ण मेहताब, निसीम इजेकिल, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, डॉ. मुल्कराज आनन्द, सुरेन्द्र मोहन्ती, देवेश दास, सियारामशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर', उदयशंकर भट्ट, जगदीशचन्द्र माथुर, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. डी.आर. बेन्द्रे, जैनेन्द्र कुमार, मन्मथनाथ गुप्त, लक्ष्मीचन्द्र जैन आदि प्रख्यात मनीषी विद्वानों ने इस गोष्ठी में भाग लिया।

योजना की कार्यान्विति के लिए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से ज्ञानपीठ पुरस्कार की प्रवर परिषद् की अध्यक्षता ग्रहण करने का अनुरोध किया गया। प्रवर परिषद् की पहली बैठक की तिथि 16 मार्च, 1963 राजेन्द्र बाबू ने निश्चित की, जिसकी अध्यक्षता वे स्वयं करते, पर दुर्भाग्य से इस तिथि से पहले ही उनका देहावसान हो गया। वह बैठक काका कालेलकर की अध्यक्षता में हुई और फिर उसके बाद प्रवर

December, 1961. On 1 January, 1962 discussions took place amongst the 72 writers who had assembled at Kolkata for the annual sessions of the All India Gujarati Sahitya Parishad and the Bharatiya Bhasha Parishad. In the meantime, four thousand copies of the plan were sent for favour of comments to various literary institutions and writers of the country.

To give a final shape to the plan a big symposium with nearly 300 outstanding writers of various languages of the country was convened on 2 April, 1962 in Delhi under the joint auspices of the Bharatiya Jnanpith and The Times of India. Presided over by Dr. V. Raghavan and Bhagwati Charan Verma respectively, the two sessions of the symposium were conducted by Dr. Dharmavir Bharati. Kaka Kalelkar, Hare Krishna Mehtab, Nissim Ezekiel, Dr. Suniti Kumar Chatterjee, Dr. Mulk Raj Anand, Surendra Mohanti, Debesh Das, Siyaram Sharan Gupta, Ramdhari Singh 'Dinkar', Udai Shankar Bhatt, Jagdish chandra Mathur, Dr. Nagendra, Dr. D.R. Bendre, Jainendra Kumar, Manmath Nath Gupta and Lakshmi chandra Jain, were some of the prominent participants.

The plan was placed before Dr. Rajendra Prasad, with a request to head the Selection Board (Pravara Parishad) of the Jnanpith Award. He fixed 16 March, 1963 for the first meeting of the Pravara Parishad over which he would have presided, but, due to his unfortunate demise in the meantime, the meeting was chaired by Kaka Kalelkar and the Pravara Parishad was thereafter headed by Dr. Sampurnanand.

परिषद् की अध्यक्षता डॉ. सम्पूर्णानन्द ने की।

विभिन्न भाषाओं में से एक सर्वोत्कृष्ट कृति (जैसा कि पहले सत्रह पुरस्कारों तक का नियम था) या साहित्यकार (जैसा कि अठारहवें पुरस्कार से परिवर्तित नियम है) के चयन का कार्य अत्यन्त कठिन और जटिल है। जब एक ही भाषा की सर्वोत्कृष्ट कृति या लेखक का चयन करने में कठिनाई होती है और कभी-कभी मतभेद या तर्क-वितर्क हो जाते हैं तब पन्द्रह, अठारह या उससे अधिक भाषाओं में से एक कृति या साहित्यकार की खोज कितनी दुष्कर होगी! ऐसे विद्वानों और साहित्यकारों का मिलना क्या असम्भव-सा नहीं होगा जो कई भाषाओं के मर्मज्ञ हों?

फिर भी विगत वर्षों के अनुभव से यह सिद्ध हुआ है कि सत्संकल्प और वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण पर आधारित प्रक्रिया ने इस चुनौती-भरे कार्य को भी सम्भव बनाया है। सारी प्रक्रिया का आरम्भ विभिन्न भाषाओं के साहित्यकारों, अध्यापकों, समालोचकों और प्रबुद्ध पाठकों से, विश्वविद्यालयों, साहित्यिक तथा भाषायी संस्थाओं से भी, प्रस्ताव भेजने का अनुरोध करने के साथ होता है। (नियमों के अनुसार, जिस भाषा को पुरस्कार मिल रहा हो उस पर अगले तीन वर्ष तक विचार नहीं किया जाता। इस प्रकार प्रति वर्ष तीन भाषाओं पर विचार नहीं किया जाता।)

हर भाषा की एक ऐसी परामर्श समिति है जिसमें तीन विख्यात साहित्य-समालोचक और विद्वान् सदस्य होते हैं। इन समितियों का गठन तीन-तीन वर्ष के लिए होता है। प्राप्त प्रस्ताव सम्बन्धित 'भाषा परामर्श समिति' द्वारा जाँचे जाते हैं। भाषा-समितियों पर यह प्रतिबन्ध नहीं है कि वे अपना विचार-विमर्श प्राप्त प्रस्तावों तक सीमित रखें। उन्हें किसी भी लेखक पर विचार करने की पूरी स्वतन्त्रता है। वास्तव में प्रवर परिषद् उनसे अपेक्षा करती है कि सम्बद्ध भाषा का कोई भी पुरस्कार-योग्य साहित्यकार विचार-परिधि से बाहर न रह जाए। किसी साहित्यकार पर विचार करते समय भाषा-समिति को उसके सम्पूर्ण कृतित्व का मूल्यांकन तो करना ही होता है, साथ ही समसामयिक भारतीय साहित्य की पृष्ठभूमि में भी उसको परखना होता है। अट्ठाईसवें पुरस्कार से नियम में किये गए संशोधन के अनुसार, पुरस्कार-वर्ष छोड़कर पिछले बीस वर्ष की अवधि में प्रकाशित कृतियों के आधार पर लेखक का मूल्यांकन किया जाता है।

भाषा परामर्श समितियों की अनुशंसाएँ प्रवर परिषद् के समक्ष प्रस्तुत की जाती हैं। प्रवर परिषद् में कम-से-कम सात और अधिक से अधिक ग्यारह सदस्य होते हैं, जिनकी ख्याति और विश्वसनीयता उच्च कोटि की होती है।

आरम्भ में प्रवर परिषद् का गठन भारतीय ज्ञानपीठ के न्यासि-मण्डल द्वारा किया गया था, तदनन्तर रिक्तियों की पूर्ति परिषद् की संस्तुति पर ही होती आ रही है। प्रत्येक सदस्य का कार्यकाल तीन वर्ष का होता है, पर वह दो बार और बढ़ाया

Selecting the most outstanding work (as was the rule for the first seventeen awards) or the writer (according to the revised rule since the eighteenth award) from so many languages for such an award is a difficult and stupendous task. Such a selection within one language itself presents problems and very often raises controversies and criticism. What then would be the case when languages are as many as fifteen, eighteen or more. Was it not almost impossible to get a team of versatile scholars who would be masters of many languages?

The experience over the years has, however, shown that, given the goodwill and an objective approach, remarkable results are possible even in such a challenging task. The process of selection begins with the submission of proposals by a large number of litterateurs, teachers, critics and discriminating readers, also from various universities, literary and language associations and other similar organisations. (As per the rules of the award, once a language gets the award, it is not eligible for consideration during the next three years. Thus three languages are out of reckoning for the award every year).

There is an Advisory Committee for each language, consisting of three eminent literary critics and scholars. These committees are reconstituted every three years. The proposals received are scrutinised by the concerned Language Advisory Committee. A Committee is not obliged to make its recommendations out of these proposals only. It is free to consider other writers before making its recommendation for the award. In fact, a Language Advisory Committee is expected to ensure that no deserving writer of the language concerned is left out of its consideration. A committee is expected to take into account the entire literary creativity of the author and evaluate it in the background of contemporary writing.

The rule has been slightly revised since the 28th Award. The works of a writer during the period of last 20 years, excluding the year for which the award is to be given, are taken into account for the award.

The recommendations of various Language Advisory Committees are placed before the Selection Board. The Board consists of not less than seven and not more than eleven members, who are all of high repute and integrity.

The Board to begin with, was constituted by the Bharatiya

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित वी.एस. नॉयपाल से वर्ष 2000 का ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहण करते हुए असमिया साहित्यकार इन्दिरा गोस्वामी

तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी से वर्ष 2013 का ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहण करते हुए हिन्दी कवि केदारनाथ सिंह

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी से वर्ष 2014 का ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहण करते हुए मराठी साहित्यकार भालचन्द्र नेमाड़े

जा सकता है। इससे पूर्व काका कालेलकर, डॉ. सम्पूर्णानन्द, डॉ. बी. गोपाल रेड्डी, डॉ. कर्ण सिंह, श्री पी.वी. नरसिंह राव, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. आर. के. दासगुप्ता, डॉ. विनायक कृष्ण गोकाक, डॉ. उमाशंकर जोशी, डॉ. मसूद हुसैन, प्रो. एम.वी. राजाध्यक्ष, डॉ. आदित्यनाथ झा, श्री जगदीशचन्द्र माथुर, डॉ. एल.एम. सिंघवी, डॉ सीताकान्त महापात्र और डॉ. नामवर सिंह सदृश विद्वान् और साहित्यकार इस परिषद् के अध्यक्ष या सदस्य रहे हैं।

प्रवर परिषद् भाषा परामर्श समितियों की संस्तुतियों का तुलनात्मक मूल्यांकन करती है। प्रवर परिषद् के सुचिन्तित पर्यालोचन के फलस्वरूप ही पुरस्कार के लिए किसी साहित्यकार का अन्तिम चयन होता है। इस चयन का पूरा दायित्व प्रवर परिषद् का है। भारतीय ज्ञानपीठ के न्यासि-मण्डल का इसमें कोई हाथ नहीं होता।

प्रसन्नता इस बात की है कि इस कष्टसाध्य प्रक्रिया को व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ है और पुरस्कार के चयनों को सभी ने सराहा है। यही कारण है कि 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' भारतीय साहित्य में सबसे अधिक प्रतिष्ठित सम्मान माना जाता है। वास्तव में यह पुरस्कार भारतीय साहित्य की समेकित साहित्य दृष्टि और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बन गया है।

पुरस्कार समारोह के अवसर पर सम्मानित साहित्यकार को प्रशस्ति-पत्र के साथ 'वाग्देवी' की कांस्य-प्रतिमा एवं ग्यारह लाख रुपये की राशि भेंट की जाती है।

सन् 1965 से 2019 तक 55 वर्षों की अवधि में 60 साहित्यकार पुरस्कृत हो चुके हैं। ■

Jnanpith Trust but, subsequently, vacancies continue to be filled in on the recommendations of the Selection Board itself. Each member has a term of three years but is eligible to continue for a further period of two more terms. Other eminent scholars and writers who have been chairmen or members of the Selection Board include Kaka Kalelkar, Dr. Sampurnanand, Dr. B. Gopala Reddy, Dr. Karan Singh, Shri P.V. Narasimha Rao, Acharya Hajari Prasad Dwivedi, Dr. R.K. Dasgupta, Dr. V.K. Gokak, Dr. Uma Shankar Joshi, Dr. Masud Hussain, Prof. M.V. Rajadhyaksha, Dr. Aditya Nath Jha and Shri Jagdish Chandra Mathur, Dr. L.M. Singhvi, Dr. Sitakant Mahapatra and Dr. Namvar Singh.

The Selection Board makes a comparative evaluation of the recommendations of the Language Advisory Committees. The final selection is the result of comprehensive and indepth deliberations of the Selection Board. The entire responsibility for selection is that of the Selection Board and Bharatiya Jnanpith Trust has no hand in it whatsoever.

It is a matter of gratification that the objectivity of this painstaking process is well recognised and the selections have been widely endorsed. That is how the Jnanpith Award has acquired an unparalleled prestige in Indian literature. The Award has, in fact, come to symbolise the comprehensive vision of Indian literature and national integrity.

On the occasion of the award presentation a citation, a bronze replica of 'Vagdevi' and an amount of Rs. 11 Lacs are presented to the Jnanpith Laureate. Since 1965 to 2019, 60 eminent authors have received the award in 55 years. ■

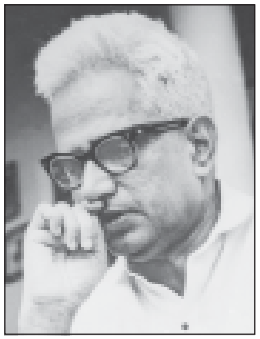

गोविन्द शंकर कुरुप
(1901-1978)
1920–58 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'ओटक्कुष़ल' (मलयालम) के लिए 1965 के पुरस्कार से सम्मानित

G.S. Kurup
(1901-1978)
Recipient of the Award for 1965 for his outstanding work, *Otakkuzhal* (Malayalam) during 1920-58

कु. वें. पुट्टप्पा
(1904-1994)
1935-60 की दो सर्वश्रेष्ठ कृतियों में 'रामायणदर्शनम्' (कन्नड़) के लिए 1967 के पुरस्कार से सह-सम्मानित

K.V. Puttappa
(1904-1994)
Co-recipient of the Award for 1967 for his outstanding work, *Ramayana-darshanam* (Kannada) during 1935-60

ताराशंकर बन्द्योपाध्याय
(1898-1971)
1925-59 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'गणदेवता' (बांग्ला) के लिए 1966 के पुरस्कार से सम्मानित

T. S. Bandyopadhyaya
(1898-1971)
Recipient of the Award for 1966 for his outstanding work, *Ganadevata* (Bangla) during 1925-59

सुमित्रानन्दन पन्त
(1900-1977)
1945-61 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'चिदम्बरा' (हिन्दी) के लिए 1968 के पुरस्कार से सम्मानित

Sumitranandan Pant
(1900-1977)
Recipient of the Award for 1968 for his outstanding work,*Chidambara* (Hindi) during 1945-61

उमाशंकर जोशी
(1911-1988)
1935-60 की दो सर्वश्रेष्ठ कृतियों में 'निशीथ' (गुजराती) के लिए 1967 के पुरस्कार से सह-सम्मानित

Uma Shankar Joshi
(1911-1988)
Co-recipient of the Award for 1967 for his outstanding work, *Nishitha* (Gujarati) during 1935-60

फ़िराक़ गोरखपुरी
(1896-1982)
1950–62 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'गुलेनग़मा' (उर्दू) के लिए 1969 के पुरस्कार से सम्मानित

Firaq Gorakhpuri
(1896-1982)
Recipient of the Award for 1969 for his outstanding work, *Gul-e-naghma* (Urdu) during 1950-62

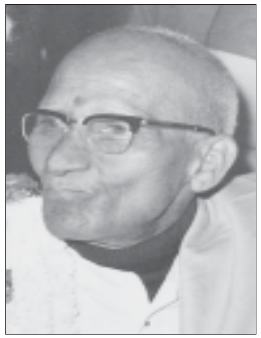

विश्वनाथ सत्यनारायण
(1895-1976)
1955-63 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'रामायण-कल्पवृक्षमु' (तेलुगु) के लिए 1970 के पुरस्कार से सम्मानित

V. Satyanarayana
(1895-1976)
Recipient of the Award for 1970 for his outstanding work, *Ramayana-kalpavrikshamu* (Telugu) during 1955-63

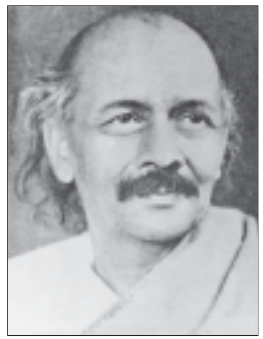

द. रा. बेन्द्रे
(1896-1981)
1962-66 की दो सर्वश्रेष्ठ कृतियों में 'नाकुतन्ति' (कन्नड़) के लिए 1973 के पुरस्कार से सह-सम्मानित

D.R. Bendre
(1896-1981)
Co-recipient of the Award for 1973 for his utstanding work, *Nakutanti* (Kannada) during 1962-66

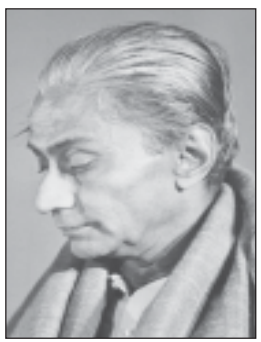

बिष्णु दे
(1909-1982)
1960-64 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'स्मृति सत्ता भविष्यत्' (बांग्ला) के लिए 1971 के पुरस्कार से सम्मानित

Bishnu Dey
(1909-1982)
Recipient of the Award for 1971 for his outstanding work, *Smriti Satta Bhavishyat* (Bangla) during 1960-64

गोपीनाथ महान्ती
(1914-1991)
1962-66 की दो सर्वश्रेष्ठ कृतियों में 'माटीमटाल' (उड़िया) के लिए 1973 के पुरस्कार से सह-सम्मानित

Gopinath Mohanty
(1914-1991)
Co-recipient of the Award for 1973 for his outstanding work, *Matimatal* (Oriya) during 1962-66

रामधारी सिंह 'दिनकर'
(1908-1974)
1961-65 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'उर्वशी' (हिन्दी) के लिए 1972 के पुरस्कार से सम्मानित

Ramdhari Singh 'Dinkar'
(1908-1974)
Recipient of the Award for 1972 for his outstanding work, *Urvashi* (Hindi) during 1961-65

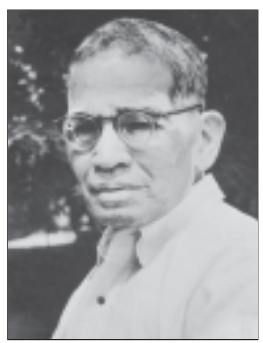

वि.स. खाण्डेकर
(1898-1976)
1958-67 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'ययाति' (मराठी) के लिए 1974 के पुरस्कार से सम्मानित

V.S. Khandekar
(1898-1976)
Recipient of the Award for 1974 for his outstanding work, *Yayati* (Marathi) during 1958-67

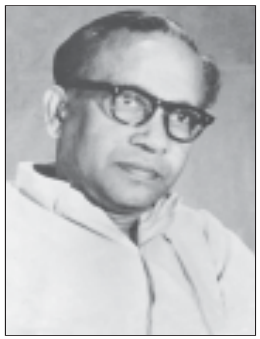

प. वै. अखिलन्दम्
(1923-1988)
1959-68 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'चित्तिरप्पावै' (तमिल) के लिए 1975 के पुरस्कार से सम्मानित

P.V. Akilandam
(1923-1988)
Recipient for the Award for 1975 for his outstanding work *Chittirappavai* (Tamil) during 1959-68

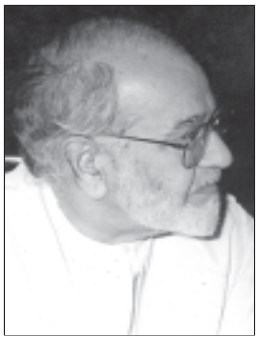

स.ही.वा. अज्ञेय
(1911-1987)
1962-71 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'कितनी नावों में कितनी बार' (हिन्दी) के लिए 1978 के पुरस्कार से सम्मानित

S.H.V. Ajneya
(1911-1987)
Recipient of the Award for 1978 for his outstanding work, *Kitni Navon Mein Kitni Bar* (Hindi) during 1962-71

आशापूर्णा देवी
(1909-1995)
1960-69 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'प्रथम प्रतिश्रुति' (बांग्ला) के लिए 1976 के पुरस्कार से सम्मानित

Ashapurna Devi
(1909-1995)
Recipient of the Award for 1976 for her outstanding work, *Prathama Pratishruti* (Bangla) during 1960-69

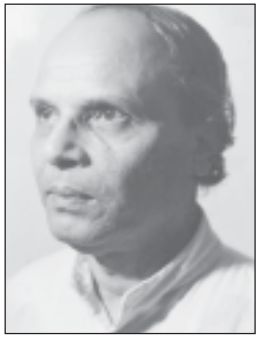

बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य
(1924-1997)
1963-72 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'मृत्युंजय' (असमिया) के लिए 1979 के पुरस्कार से सम्मानित

B.K. Bhattacharya
(1924-1997)
Recipient of the Award for 1979 for his outstanding work, *Mrityunjaya* (Assamese) during 1963-72

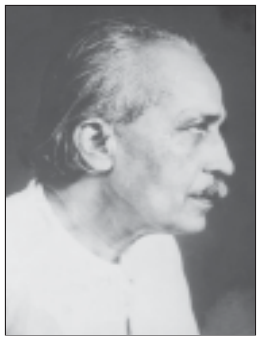

को. शिवराम कारन्त
(1902-1997)
1961-70 की सर्वश्रेष्ठ कृति मूकज्जिय कनसुगलु' (कन्नड़) के लिए 1977 के पुरस्कार से सम्मानित

K.S. Karanth
(1902-1997)
Recipient of the Award for 1977 for his outstanding work, *Mukajjiya Kanasugalu* (Kannada) during 1961-70

शं.कु. पोट्टेक्काट
(1913-1982)
1964-73 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'ओरुदेशत्तिन्टे कथा' (मलयालम) के लिए 1980 के पुरस्कार से सम्मानित

S.K. Pottekkatt
(1913-1982)
Recipient of the Award for 1980 for his outstanding work, *Oru Desattinte Katha* (Malayalam), during 1964-73

अमृता प्रीतम
(1919-2005)
1965-74 की सर्वश्रेष्ठ कृति 'काग़ज़ ते केनवास' (पंजाबी) के लिए 1981 के पुरस्कार से सम्मानित

Amrita Pritam
(1919-2005)
Recipient of the Award for 1981 for her outstanding work, *Kaghaz te Canvas* (Punjabi), during 1965-74

तकषी शिवशंकर पिल्लै
(1912-1999)
भारतीय साहित्य (मलयालम) को उत्कृष्ट योगदान के लिए 1984 के पुरस्कार से सम्मानित

Thakazhi S. Pillai
(1912-1999)
Recipient of the Award for 1984 for outstanding contribution to Indian literature (Malayalam)

महादेवी वर्मा
(1907-1987)
1977 से पूर्व की अवधि में भारतीय साहित्य (हिन्दी) को उत्कृष्ट योगदान के लिए 1982 के पुरस्कार से सम्मानित

Mahadevi Varma
(1907-1987)
Recipient of the Award for 1982 for outstanding contribution to Indian literature (Hindi) during pre-1977 period

पन्नालाल पटेल
(1912-1989)
भारतीय साहित्य (गुजराती) को उत्कृष्ट योगदान के लिए 1985 के पुरस्कार से सम्मानित

Pannalal Patel
(1912-1989)
Recipient of the Award for 1985 for contribution to Indian literature (Gujarati)

मास्ति वें. अय्यंगार
(1891-1986)
1978 से पूर्व की अवधि में भारतीय साहित्य (कन्नड़) को उत्कृष्ट योगदान के लिए 1983 के पुरस्कार से सम्मानित

Masti V. Iyengar
(1891-1986)
Recipient of the Award for 1983 for outstanding contribution to Indian literature (Kannada) during pre-1978 period

सच्चिदानन्द राउतराय
(1916-2004)
भारतीय साहित्य (उड़िया) के उत्कृष्ट योगदान के लिए 1986 के पुरस्कार से सम्मानित

Satchidananda Rautroy
(1916-2004)
Recipient of the Award for 1986 for outstanding contribution to Indian literature (Oriya)

वि.वा. शिरवाडकर 'कुसुमाग्रज'
(1912-1999)
भारतीय साहित्य (मराठी) को 1967-81 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1987 के पुरस्कार से सम्मानित

V.V.S. 'Kusumagraj'
(1912-1999)
Recipient of the Award for 1987 for outstanding contribution to Indian literature (Marathi), during 1967-81

विनायक कृष्ण गोकाक
(1909-1992)
भारतीय साहित्य (कन्नड़) को 1970-84 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1990 के पुरस्कार से सम्मानित

V. K. Gokak
(1909-1992)
Recipient of the Award for 1990 for outstanding contribution to Indian literature (Kannada) during 1970-84

सी. नारायण रेड्डी
(1932-2017)
भारतीय साहित्य (तेलुगु) को 1968-82 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1988 के पुरस्कार से सम्मानित

C. Narayana Reddy
(1932-2017)
Recipient of the Award for 1988 for outstanding contribution to Indian literature (Telugu) during 1968-82

सुभाष मुखोपाध्याय
(1919-2003)
भारतीय साहित्य (बांग्ला) को 1971-85 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1991 के पुरस्कार से सम्मानित

Subhash Mukhopadhyaya
(1919-2003)
Recipient of the Award for 1991 for outstanding contribution to Indian literature (Bangla) during 1971-85

कुर्रतुलऐन हैदर
(1927-2007)
भारतीय साहित्य (उर्दू) को 1969-83 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1989 के पुरस्कार से सम्मानित

Qurratulain Hyder
(1927-2007)
Recipient of the Award for 1989 for outstanding contribution to Indian literature (Urdu), during 1969-83

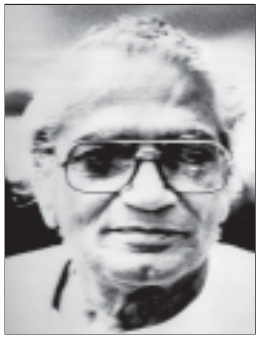

नरेश मेहता
(1922-2000)
भारतीय साहित्य (हिन्दी) को 1972-91 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1992 के पुरस्कार से सम्मानित

Naresh Mehta
(1922-2000)
Recipient of the Award for 1992 for outstanding contribution to Indian literature (Hindi) during 1972-91

सीताकान्त महापात्र
(1937)
भारतीय साहित्य (उड़िया) को 1973-92 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1993 के पुरस्कार से सम्मानित

Sitakant Mahapatra
(1937)
Recipient of the Award for 1993 for outstanding contribution to Indian literature (Oriya) during 1973-92

महाश्वेता देवी
(1926-2016)
भारतीय साहित्य (बांग्ला) को 1976-95 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1996 के पुरस्कार से सम्मानित

Mahasveta Devi
(1926-2016)
Recipient of the Award for 1996 for outstanding contribution to Indian literature (Bangla) during 1976-95

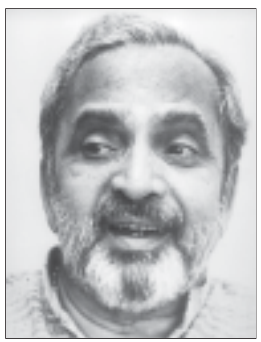

यू. आर. अनन्तमूर्ति
(1932-2014)
भारतीय साहित्य (कन्नड़) को 1974-93 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1994 के पुरस्कार से सम्मानित

U.R. Anantha Murthy
(1932-2014)
Recipient of the Award for 1994 for outstanding contribution to Indian literature (Kannada) during 1974-93

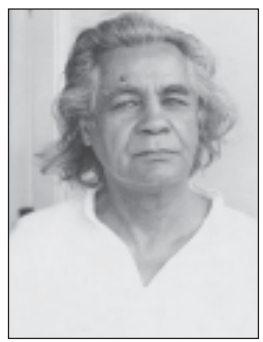

अली सरदार जाफ़री
(1913-2000)
भारतीय साहित्य (उर्दू) को 1977-96 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1997 के पुरस्कार से सम्मानित

Ali Sardar Jafri
(1913-2000)
Recipient of the Award for 1997 for outstanding contribution to Indian literature (Urdu) during 1977-96

एम.टी. वासुदेवन नायर
(1933)
भारतीय साहित्य (मलयालम) को 1975-94 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1995 के पुरस्कार से सम्मानित

M.T. Vasudevan Nair
(1933)
Recipient of the Award for 1995 for outstanding contribution to Indian literature (Malayalam) during 1975-94

गिरीश कार्नाड
(1938-2019)
भारतीय साहित्य (कन्नड़) को 1978-97 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1998 के पुरस्कार से सम्मानित

Girish Karnad
(1938-2019)
Recipient of the Award for 1998 for outstanding contribution to Indian literature (Kannada) during 1978-97

निर्मल वर्मा
(1929-2005)
भारतीय साहित्य (हिन्दी) को 1979-98 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1999 के पुरस्कार से सह-सम्मानित

Nirmal Verma
(1929-2005)
Co-recipient of the Award for 1999 for outstanding contribution to Indian literature (Hindi) during 1979-98

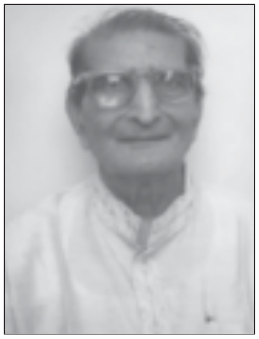

राजेन्द्र शाह
(1913-2010)
भारतीय साहित्य (गुजराती) को 1981-2000 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2001 के पुरस्कार से सम्मानित

Rajendra Shah
(1913-2010)
Recipient of the Award for 2001 for outstanding contribution to Indian literature (Gujarati) during 1981-2000

गुरदयाल सिंह
(1933-2016)
भारतीय साहित्य (पंजाबी) को 1979-98 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 1999 के पुरस्कार से सह-सम्मानित

Gurdial Singh
(1933-2016)
Co-recipient of the Award for 1999 for outstanding contribution to Indian literature (Punjabi) during 1979-98

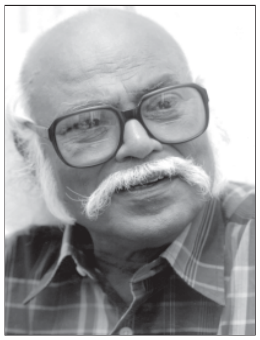

डी. जयकान्तन
(1934-2015)
भारतीय साहित्य (तमिल) को 1982-2001 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2002 के पुरस्कार से सम्मानित

D. Jayakanthan
(1934-2015)
Recipient for the Award for 2002 for his outstanding contribution to Indian literature (Tamil) during 1982-2001

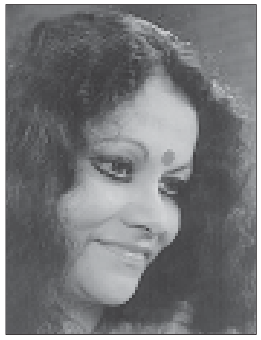

इन्दिरा गोस्वामी
(1942-2011)
भारतीय साहित्य (असमिया) को 1980-1999 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2000 के पुरस्कार से सम्मानित

Indira Goswami
(1942-2011)
Recipient of the Award for 2000 for outstanding contribution to Indian literature (Assamese) during 1980-99

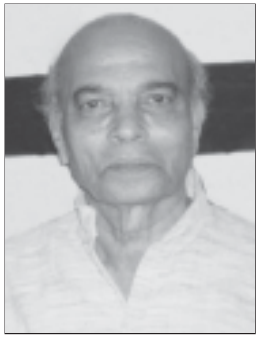

विंदा करंदीकर
(1918-2010)
भारतीय साहित्य (मराठी) को 1983-2002 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2003 के पुरस्कार से सम्मानित

Vinda Karandikar
(1918-2010)
Recipient of the Award for 2003 for outstanding contribution to Indian literature (Marathi) during 1983-2002

रहमान राही
(1925)
भारतीय साहित्य (कश्मीरी) को 1984-2003 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2004 के पुरस्कार से सम्मानित

Rahman Rahi
(1925)
Recipient of the Award for 2004 for outstanding contribution to Indian literature (Kashmiri) during 1984-2003

सत्यव्रत शास्त्री
(1930)
भारतीय साहित्य (संस्कृत) को 1986-2005 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2006 के पुरस्कार से सह-सम्मानित

Satya Vrat Shastri
(1930)
Co-recipient of the Award for 2006 for outstanding contribution to Indian literature (Sanskrit) during 1986-2005

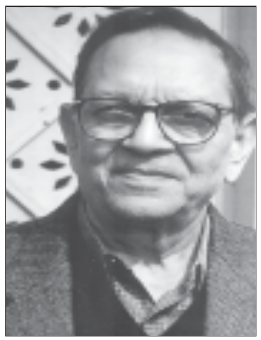

कुँवर नारायण
(1927-2017)
भारतीय साहित्य (हिन्दी) को 1985-2004 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2005 के पुरस्कार से सम्मानित

Kunwar Narain
(1927-2017)
Recipient of the Award for 2005 for outstanding contribution to Indian literature (Hindi) during 1985-2004

ओ.एन.वी. कुरुप
(1931-2016)
भारतीय साहित्य (मलयालम) को 1987-2006 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2007 के पुरस्कार से सम्मानित

O.N.V. Kurup
(1931-2016)
Recipient of the Award for 2007 for outstanding contribution to Indian literature (Malayalam) during 1987-2006

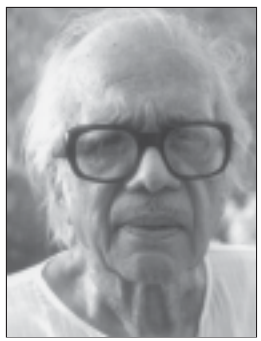

रवीन्द्र केलेकर
(1925-2010)
भारतीय साहित्य (कोंकणी) को 1986-2005 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2006 के पुरस्कार से सह-सम्मानित

Ravindra Kelekar
(1925-2010)
Co-recipient of the Award for 2006 for outstanding contribution to Indian literature (Konkani) during 1986-2005

शहरयार
(1936-2012)
भारतीय साहित्य (उर्दू) को 1988-2007 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2008 के पुरस्कार से सम्मानित

Shahryar
(1936-2012)
recipient of the Award for 2008 for outstanding contribution to Indian literature (Urdu) during 1988-2007

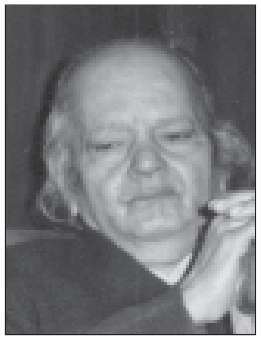

अमरकान्त
(1925-2014)
भारतीय साहित्य (हिन्दी) को 1989-2008 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2009 के पुरस्कार से सह-सम्मानित

Amarkant
(1925-2014)
Co-recipient of the Award for 2009 for outstanding contribution to Indian literature (Hindi) during 1989-2008

प्रतिभा राय
(1943)
भारतीय साहित्य (ओड़िया) को 1991-2010 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2011 के पुरस्कार से सम्मानित

Pratibha Ray
(1943)
recipient of the Award for 2011 for outstanding contribution to Indian literature (Oriya) during 1991-2010

श्रीलाल शुक्ल
(1925-2011)
भारतीय साहित्य (हिन्दी) को 1989-2008 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2009 के पुरस्कार से सह-सम्मानित

Shrilal Shukla
(1925-2011)
Co-recipient of the Award for 2009 for outstanding contribution to Indian literature (Hindi) during 1989-2008

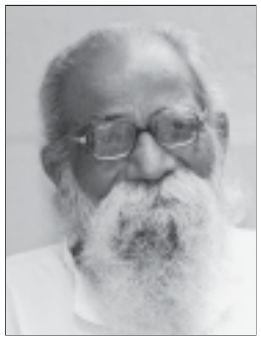

रावूरि भरद्वाज
(1927-2013)
भारतीय साहित्य (तेलुगु) को 1992-2011 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2012 के पुरस्कार से सम्मानित

Ravuri Bharatwaja
(1927-2013)
recipient of the Award for 2012 for outstanding contribution to Indian literature (Telugu) during 1992-2011

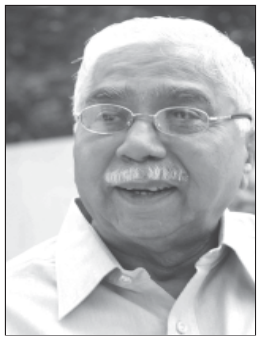

चन्द्रशेखर कंबार
(1937)
भारतीय साहित्य (कन्नड़) को 1990-2009 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2010 के पुरस्कार से सम्मानित

Chandrasekhar Kambar
(1937)
recipient of the Award for 2010 for outstanding contribution to Indian literature (Kannada) during 1989-2009

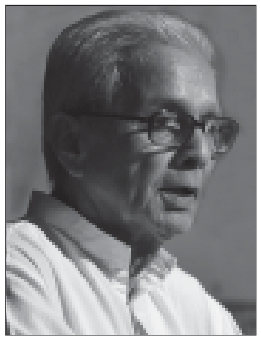

केदारनाथ सिंह
(1934-2018)
भारतीय साहित्य (हिन्दी) को 1993-2012 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2013 के पुरस्कार से सम्मानित

Kedarnath Singh
(1934-2018)
Recipient of the Award for 2013 for outstanding contribution to Indian literature (Hindi) during 1993-2012

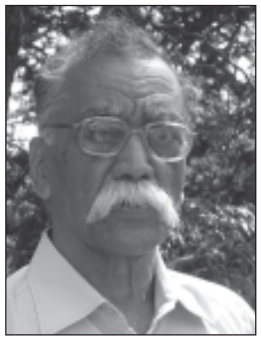

भालचन्द्र नेमाड़े
(1938)
भारतीय साहित्य (मराठी) को 1994-2013 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2014 के पुरस्कार से सम्मानित

Bhalchandra Nemade
(1938)
Recipient of the Award for 2014 for outstanding contribution to Indian literature (Marathi) during 1994-2013

कृष्णा सोबती
(1925-2019)
भारतीय साहित्य (हिन्दी) को 1997-2016 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2017 के पुरस्कार से सम्मानित

Krishna Sobti
(1925-2019)
Recipient of the Award for 2017 for outstanding contribution to Indian literature (Hindi) during 1997-2016

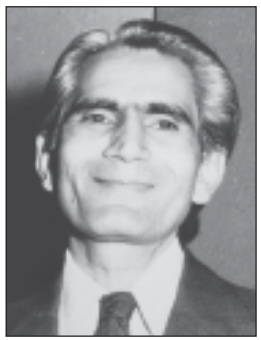

रघुवीर चौधरी
(1938)
भारतीय साहित्य (गुजराती) को 1995-2014 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2015 के पुरस्कार से सम्मानित

Raghuveer Chaudhari
(1938)
Recipient of the Award for 2015 for outstanding contribution to Indian literature (Gujarati) during 1995-2014

अमिताभ घोष
(1956)
भारतीय साहित्य (अँग्रेज़ी) को 1998-2017 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2018 के पुरस्कार से सम्मानित

Amitav Ghosh
(1956)
Recipient of the Award for 2018 for outstanding contribution to Indian literature (English) during 1998-2017

शंख घोष
(1932)
भारतीय साहित्य (बांग्ला) को 1996-2015 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2016 के पुरस्कार से सम्मानित

Sankha Ghosh
(1932)
Recipient of the Award for 2016 for outstanding contribution to Indian literature (Bangla) during 1996-2015

अक्कितम अच्युतन नंबूदिरि
(1926)
भारतीय साहित्य (मलयालम) को 1999-2018 की अवधि में उत्कृष्ट योगदान के लिए 2019 के पुरस्कार से सम्मानित

Akkitham Achyuthan Nambudiri
(1926)
Recipient of the Award for 2019 for outstanding contribution to Indian literature (Malayalam) during 1999-2018

डॉ. प्रतिभा राय (अध्यक्ष)

जन्म : 1943

डॉ. प्रतिभा राय ने रेवेंशा कॉलेज, कटक से विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। स्नातकोत्तर एवं पी-एच.डी. हेतु शिक्षा शास्त्र उनके अध्ययन का क्षेत्र रहा। कई वर्षों तक रेवेंशा कॉलेज में अध्यापन। बी.जे.बी. कॉलेज में शिक्षा शास्त्र विभाग की अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। ओड़िशा लोक सेवा आयोग की सदस्य रहीं। अनेक सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित कृतियाँ : अब तक 20 उपन्यास और 25 कहानी-संग्रहों के साथ कविता, यात्रा-वृत्तान्त एवं निबन्ध की अनेक पुस्तकें प्रकाशित। अँग्रेजी, हंगेरियन एवं प्रमुख भारतीय भाषाओं में कृतियों का अनुवाद।

सम्मान/पुरस्कार : पद्मश्री (2007), ज्ञानपीठ पुरस्कार (2011), मूर्तिदेवी पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, ओड़िशा साहित्य अकादमी पुरस्कार, अमृत कीर्ति पुरस्कार, विषुव पुरस्कार, कथा भारती उपाधि, कथा पुरस्कार और सारला पुरस्कार।

सम्पर्क: आख्यायिका, 27 गजपति नगर,
भुवनेश्वर-751005 (ओड़िशा)

Dr. Pratibha Roy (Chairman)

Born : 1943

A Bachelor of Science from Ravenshaw College, Cuttack; Dr. Pratibha Ray completed her post graduation and Ph. D in Education. Remained a teacher in Ravenshaw College for many years, she was also the Head of the Department of Education in B.J.B. College. Associated with many cultural and social institutions, she was also a member of Odisha Public Service Commission.

Besides authoring many poetry collections, travelogues and essays, Dr. Ray has to her credit 20 novels and 25 short story collections. Her works have been extensively translated in to English and Hungarian besides major Indian languages.

Dr. Ray is the recipient of many coveted awards and honours that include Padma Shri, Jnanpith Award, Moortidevi Award, Sahitya Akademi, Oriya Sahitya Akademi Puraskar, Amri Kirti Puraskar and Sarla Puraskar.

'Akhyaika', 27 Gajapati Nagar, P.O. Sainik School, Bhubaneshwar 751 005

श्री माधव कौशिक

जन्म : 1954

हिन्दी के सुविख्यात साहित्यकार एवं ग़ज़लकार माधव कौशिक का जन्म भिवानी (हरियाणा) में हुआ। आपने पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से एम.ए. (हिन्दी), बी.एड., स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा किया।

साहित्य की लगभग सभी विधाओं में सृजनरत माधव कौशिक की 33 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें सोलह ग़ज़ल-संग्रह, दो खंड-काव्य, तीन नवगीत संग्रह, तीन कविता-संग्रह, तीन कहानी संग्रह, दो बाल-साहित्य, तथा दो आलोचना ग्रंथ प्रमुख हैं। कुछ पुस्तकों का उर्दू, पंजाबी, संस्कृत, उड़िया, असमी तथा बांग्ला में भी अनुवाद हुआ है। माधव कौशिक की साहित्य-साधना पर देश के विभिन्न दस विश्वविद्यालयों में शोध कार्य हो चुका हे तथा इनकी कुछ पुस्तकें स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं।

बाबू बाल मुकन्द गुप्त सम्मान, महाकवि सूरदास सम्मान (हरियाणा साहित्य अकादमी), आल इंडिया बलराज साहनी पुरस्कार, शिरोमणि हिन्दी साहित्यकार सम्मान (पंजाब सरकार), सहस्त्राब्दी सम्मान सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं सम्मान से सम्मानित।

जोहान्सबर्ग, शारजाह, अबू धाबी तथा मैक्सिको में आयोजित विश्व लेखक सम्मेलनों में भारतीय साहित्य अकादमी का प्रतिनिधित्व।

सम्प्रति : चण्डीगढ़ साहित्य अकादमी के अध्यक्ष तथा राष्ट्रीय साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष हैं।

पता : मकान नं-3277 सेक्टर-45 डी,चंडीगढ़-160047
ई-मेल : k.madhav9@gmail.com

Shri Madhav Kaushik

Born : 1954

Eminent Hindi Author and poet Madhav Kaushik was born in Bhiwani (Haryana). He did his M.A.(Hindi), B.Ed and Post Graduate Diploma in Translation from Panjab University, Chandigarh.

He has 33 books of different genres of literature to his credit which include 16 collections of Ghazals, 2 khand Kavya, 3 collections of Navgeet, 3 of Poems, 3 books of Short Stories, 2 books of Children Literature and 2 books of Criticism. Some of his books have been translated in Urdu, Panjabi, Sanskrit, Oriya, Assemese and Bangla. Ten research works have been done in different Universities on the literary contribution of Madhav Kaushik and some of his books are part of curriculum at Graduate and Post Graduate Level.

Madhav Kaushik is recipient of many prestigious literary awards including Babu Bal Mukand Gupt Samman, MahaKavi Surdas Samman(Haryana Sahitya Akadmi),All India Balraj Sahni Award, Millennium Award, Shiromani Sahityakar Samman (Punjab Govt.).

He has represented National Sahitya Akademi in International Authors Meet held at Johansberg, Sharjah, Abu Dhabi and Mexico.

Presently, he is chairman of Chandigarh Sahitya Akademi and Vice-President of National Sahitya Akademi,New Delhi.

Address : 3277, Sector 45-D, Chandigarh-160047
E-mail : k.madhav9@gmail.com

प्रो. एम. शमीम हनफ़ी

जन्म : 1938
आलोचक, लेखक व शिक्षाविद्

उर्दू विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया में प्रोफेसर इमेरिटस। प्रो. हनफ़ी सुविख्यात आलोचक, लेखक और शिक्षाविद् हैं। उर्दू में डी.लिट. हैं। इन्होंने चौबीस पुस्तकों सहित, चार नाटक, सात बाल रचनाएँ लिखी

हैं। प्रतिष्ठित उर्दू जर्नलों, अखबारों और पत्रिकाओं के अतिरिक्त आकाशवाणी से नियमित रचनाओं का प्रकाशन और प्रसारण होता रहा है। इन्होंने लगभग 200 वार्ताएँ, फीचर और नाटक आकाशवाणी और दूरदर्शन के लिए लिखे हैं।

भारतीय साहित्य में श्रीवृद्धि के लिए भारतीय ज्ञानपीठ के ज्ञान गरिमा अलंकरण से सम्मानित किये गये हैं।

पता : बी/114, ज़ाकिर बाग, ओखला रोड, नयी दिल्ली-110025

Prof. M. Shamim Hanfi

Critic, Author and Educationist
Born : 1939

Professor Emeritus, Urdu Studies, Jamia Millia Islamia; Prof Hanfi is a well known critic, author and educationist. A D. Litt in Urdu, he had authored twenty four criticisms; four plays and seven original works for children. Besides, he is a regular contributor in leading Urdu journals, newspapers and periodicals besides being a regular broadcaster with the AIR and written around two hundred talks, features and plays for Radio and television.

Recipient of many awards and recognitions, Prof. Hanfi has recently been honoured by Bharatiya Jnanpith with Gyan Garima Alankaran for his contribution in Indian literature.

Address : B/114, Zakir Bagh, Okhla Road, New Delhi 110025

डॉ. सुरंजन दास

कुलपति, जाधवपुर विश्वविद्यालय
जन्म : 1954

प्रोफेसर सुरंजन दास सम्प्रति कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति और विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन स्टडीज के निदेशक हैं। विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष भी हैं। वह इंग्लैंड के हॅल विश्वविद्यालय तथा एक्सटर विश्वविद्यालय के मानद फैलो और मैलबर्न विश्वविद्यालय के ऑस्ट्रेलिया-भारत संस्थान के विशिष्ट फैलो भी हैं।

डॉ. दास ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी.फिल. की उपाधि प्राप्त हैं। वह भारतीय इतिहास और राजनीति तथा विश्व राजनीति में भारत की संलग्नता पर निरन्तर लिखते रहे हैं।

कई राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय अकादमिक सम्मानों से विभूषित प्रो. दास यूरोप और अमेरिका के कई उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्यापन कार्यक्रमों के लिए आमन्त्रित किये गये। वे विश्व के कई शैक्षिक व गैर-शैक्षिक शिष्टमंडलों के सदस्य रहे हैं। प्रो. दास देश के उच्च शिक्षा से जुड़ी नियामक संस्थाओं से भी सम्बद्ध हैं।

पता : एफई-14, साल्ट लेक सिटी,
कोलकाता - 700 106 पश्चिम बंगाल

Dr. Suranjan Das

Vice-Chancellor, Jadavpur University
Born : 1954

Professor Suranjan Das is currently the Vice-Chancellor of the Calcutta University and Director, Institute of Foreign Policy Studies, of that University. He holds a Chair in History in the same University from where he is now on lien. He is also the Honorary Professor in University of Hull, UK, the University of Exeter, UK and Distinguished Fellow, Australia-India Institute, Melbourne University. Professor Das is a recipient of D.Phil. from the University of Oxford and has written extensively on Indian history and politics and India's involvement with world politics.

A recipient of national and international academic honours, Professor Das has held visiting assignments in institutions of higher learning in Europe and the USA. He has been a member of official and semi-official academic delegations to countries around the world. Professor Das is associated with major policy formulating bodies for higher education in India.

Address : FE-14, Salt Lake City,
Kolkata - 700 106 (West Bengal)

डॉ. पुरुषोत्तम बिलिमाले

सुप्रसिद्ध विद्वान व समालोचक
जन्म : 1955

डॉ. पुरुषोत्तम बिलिमाले ने कन्नड़ विश्वविद्यालय, हम्पी, कर्नाटक में कन्नड़ के प्रोफेसर के रूप में कई वर्षों तक सेवा की और फिर अमेरिकी भारतीय अध्ययन संस्थान, नयी दिल्ली में निदेशक के रूप में कार्य किया। वर्तमान में वह कन्नड़ भाषा चेयर के अध्यक्ष, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली में कन्नड़ के प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं।

प्रो. बिलिमाले की विशेषज्ञता के क्षेत्र साहित्यिक आलोचना, भारतीय लोककथा, तुलु अध्ययन और दक्षिण भारतीय भाषाएँ हैं। उन्होंने उत्तरी और दक्षिणी भारत दोनों में फील्ड वर्क किया है। उन्होंने भारतीय साहित्य और लोककथाओं पर 27 पुस्तकें और 75 से अधिक लेख प्रकाशित किए थे। हाल ही में स्थापित (अक्टूबर 2015) कन्नड़ भाषा चेयर, जेएनयू में एक प्रोफेसर के रूप में, वे अपनी सभी अभिव्यक्तियों में कर्नाटक की भाषा, साहित्य और संस्कृति पर शिक्षण, शोध और प्रकाशन में उत्कृष्टता को बढ़ावा दे रहे हैं।

वह प्रतिष्ठित कर्नाटक राज्य पुरस्कार, कर्नाटक लोकगीत अकादमी पुरस्कार और कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता रहे हैं। उन्होंने यूएसए, जापान, बेल्जियम, इजरायल और ब्रिटेन सहित अधिकांश देशों में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया और व्याख्यान दिया है।

पता: 6098/8 सन्तुष्टि अपार्टमेंट,
सेक्टर डी, पॉकेट 6, वसन्त कुंज, नयी दिल्ली

Dr. Purushottama Bilimale

Eminent scholar and critic
Born : 1955

Dr. Purushothama Bilimale (August 21, 1955) has served for many years as Professor of Kannada at the Kannada University, Hampi, Karnataka and then as a Director at the American Institute of Indian

studies, New Delhi. Currently he is working as Professor of Kannada at the Kannada Language Chair, Centre of Indian Languages, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

Prof. Bilimale's areas of specialization are Literary Criticism, Indian folklore, Tulu studies, and South Indian Languages. He has carried out field work in both Northern and Southern India. He had published 27 books and more than 75 articles on Indian literature and folklore. As a professor at the recently established (October 2015) Kannada Language Chair, JNU, he is promoting excellence in teaching, researching and publishing on language, literature and culture of Karnataka in all its multilingual and plural manifestations.

He has been the recipient of many awards including the prestigious Karnataka State award, Karnataka Folklore Academy award and Karnataka Sahitya Academy award. He has visited and lectured on the various aspects of Indian culture at most of the countries including USA, Japan, Belgium, Israel and Britain.

Address : 6098/8 Santhushti Apartments
Sector D, Pocket 6, Vasant Kunj, New Delhi

डॉ. एस.मणि वालन

सुप्रसिद्ध विद्वान
जन्म : 1953

वर्तमान में वे अरुल अनन्दर कॉलेज, करुमाथुर, तमिलनाडु के सचिव हैं। वह विश्वविद्यालय के कॉलेजों में पिछले इकतीस वर्षों से अध्यापन और प्रशासन कर रहे हैं। उन्होंने कविता, गद्य, नाटक और शोध में चौंतीस पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

वह सेंटर फॉर क्रिश्चिन रिसर्च के संस्थापक और निदेशक हैं। वे एक रिसर्च गाइड हैं। भारतीय इतिहास को सिद्ध करने के लिए, वह सदियों पुराने ताड़ के पत्ते और कागज़ की पांडुलिपियों को विशेष रूप से कविता-साहित्यिक रूप में इकट्ठा करते हैं। उनकी कविताओं को स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाया गया है। उन्हें कुछ पुरस्कार मिले हैं। समाज और साहित्य के लिए उनके समर्पित योगदान और सेवा के बारे में कुछ टीवी चैनलों द्वारा उनका साक्षात्कार लिया गया है।

पता : अरुप, इल्लम, अरुल अनन्दर कॉलेज (स्वायत्त), कुरुमधुर-625 514

Dr. S. Mani Valan

Eminent scholar
Born : 1953

Presently he is the Secretary of Arul Anandar College, Karumathur, Tamil Nadu. He has been teaching and in the administration for thirty one years in the University colleges. He has prose, poetry, drama and research work published to his credit.

He is the Founder and Director of the Centre for Christian Research. He is a Research Guide. In order to establish Indian History, he collects centuries old palm leaf and paper manuscripts particularly in poetry - literary form. His poems have been taught in schools and colleges. He has received some awards. He has been interviewed by some TV channels regarding his dedicative contribution and service to society and literature.

Address : Arrupe Illam, Arul Anandar College (Autonomous), Karumathur-625 514

डॉ. चन्द्रकान्त पाटिल

कवि, आलोचक, अनुवादक व सम्पादक
जन्म : 1944

बॉटनी में एमएस.सी. और बायोकेमेस्ट्री में पीएच.डी.। मूल रूप से मराठी और हिन्दी और यदा-कदा अँग्रेज़ी में लेखन। वर्ष 2004 में 40 वर्ष अध्यापन के बाद सेवानिवृत्त। मराठी में चार और हिन्दी में एक कविता-संग्रह प्रकाशित। मराठी व हिन्दी में अनूदित, सम्पादित और बालसाहित्य की लगभग 40 पुस्तकें प्रकाशित। साहित्यिक पत्रिका 'साक्षात्कार', 'प्रगतिशील वसुधा' (हिन्दी) व 'आलोचना' (मराठी) समेत मराठी की पाँच व हिन्दी की पाँच पत्रिकाओं का अतिथि सम्पादन। लगभग 1250 समकालीन कविताओं का विभिन्न भारतीय व विदेशी भाषाओं से अनुवाद प्रकाशित।

कई साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़ाव। यूनेस्को के इंडियन नेशनल कमीशन (कल्चर), ऑल इंडिया मराठी साहित्य महामंडल, साहित्य अकादेमी, नेशनल बुक ट्रस्ट आदि से सम्बद्ध।

कबीर सम्मान, एनसीईआरटी, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय आदि पुरस्कार की निर्णायक समिति में सदस्य। साहित्य सेवा हेतु राष्ट्रीय सम्मान।

पता : ए-501, ऋतुरंग अपार्टमेंट्स, नजदीक परांजपे स्कूल, कोथरूद, पुणे-411 038 (महाराष्ट्र)

Dr. Chandrakant Patil

Poet, Critic, Translator, Editor

Born : 1944

M.Sc. in Botany and Ph.D. in Bio Chemistry. Writes mainly in Marathi, also in Hindi, and occasionally in English. Retired after 40 years of teaching in 2004 . Has 4 collections of poetry in Marathi and 1 in Hindi, and 4 collections of critical essays in Marathi and 1 collection of critical essays in Hindi,besides 40 other books of translations, Has Edited anthologies, pen-portraits, children's literature etc. in Marathi and Hindi. He has been a guest editor of at least 5 literary journals in Marathi and 5 literary journals in Hindi, including "Saakshatkaar" (Hindi), "Pragati-sheel Vasudha" (Hindi), "Aalo-chana" (Marathi). Has translated more than 1250 contemporary poems from various Indian and world languages.

Has been a member of many literary and cultural bodies, such as Indian National Commission for UNESCO (Culture), All India Marathi Sahitya Mahamandal, Sahitya Akademi, National Book Trust etc. Has worked as Jury member for many National and State level awards such as Kabir Sammaan, NCERT, Kendriya Hindi Nideshaalay, etc. Has won National award for literature.

Address : A-501, Ruturang Apartments Near Paranjape School, Kothrud
Pune - 411 038 (Maharashtra)

डॉ. हरीश त्रिवेदी

जन्म : 1947

प्रयाग विश्वविद्यालय में बी.ए. तक संस्कृत पढ़ने के बाद अँग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. और फिर विदेश से वर्जीनिया वुल्फ़ पर पीएच.डी.। अध्यापन सेंट स्टीफेंस कॉलेज दिल्ली में (1969-84) और दिल्ली विश्वविद्यालय में (1984-2012) लन्दन और शिकागो विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर रहे और अमेरिका, इंग्लैंड, यूरोप, दक्षिण अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया, ऑस्ट्रेलिया, चीन और जापान इत्यादि में भाषण देने बुलाये जाते रहते हैं।

मुख्य प्रकाशन हैं—आलोचना की पुस्तक Colonial Transactions : English Literature and India (कलकत्ता 1993, मैनचेस्टर 1995) व उत्तर-उपनिवेशवाद, अनुवाद-शास्त्र व तुलनात्मक साहित्य से सम्बन्धित अनेक सम्पादित ग्रन्थ जो देश-विदेश में छपे हैं।

प्रेमचन्द की जीवनी 'कलम का सिपाही' का अँग्रेज़ी अनुवाद (1982) व प्रेमचन्द, अज्ञेय, मंटो, मोहन राकेश, रघुवीर सहाय, कुँवर नारायण, केदारनाथ सिंह आदि की कहानियों-कविताओं का भी अँग्रेज़ी अनुवाद। अँग्रेज़ी और हिन्दी दोनों में लिखते हैं। इन दिनों 'भारतीय साहित्य : 1500 ईसापूर्व से वर्ष 2000 तक' नामक एक संग्रह का सम्पादन कर रहे हैं और विश्व-साहित्य का इतिहास लिखने की स्वीडन से संचालित एक अन्तर्राष्ट्रीय परियोजना से लेखक व सम्पादक-मंडल के सदस्य के रूप में सम्बन्धित हैं।

पता : डी-203, विदिशा अपार्टमेंट,
आई.पी. एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

Dr. Harish Trivedi

Born 1947

Harish Trivedi studied Sanskrit till his B.A. and then English Literature for M.A. at the University of Allahabad, and then got a Ph. D. on Virginia Woolf from the University of Wales, U.K. He taught at St Stephen's College, Delhi (1969-84) and the University of Delhi (1984-2012), and was visiting professor at the universities of Chicago and London. He has lectured at various other universities in the USA, the UK, Europe, South America, South Africa, South-East Asia, Australia, China and Japan.

He is the author of Colonial Transactions: English Literature and India (Calcutta 1993; Manchester 1995), and has co-edited The Nation across the World: Postcolonial Literary Representations (New Delhi 2007; New York 2008), Literature and Nation: Britain and India 1800-1990 (London 2000), and Post-colonial Translation: Theory and Practice (London 1999). He has translated a biography of Premchand into English (1982), and also short stories and poems by Premchand, Agyeya, Manto, Mohan Rakesh, Raghuvir Sahay, Kunwar Narayan, Kedarnath Singh and others. He is currently editing an anthology of Indian Literature from 1500 B.C. to 2000 A.D., and is one of the contributing editors of an international project based in Stockholm for writing a history of World Literature. He writes in both English and Hindi.

Address : D-203, Vidisha Apartment, I.P. Ext., Delhi-110 092

श्रीमती प्रभा वर्मा

जन्म : 1959

कवि, साहित्यकार, पत्रकार और संपादक

प्रभा वर्मा के पास मास्टर डिग्री और कानून की डिग्री है। मलयालम भाषा की अकादमी पुरस्कार विजेता भारतीय कवि। उनकी नौ कविता संग्रह, तीन उपन्यास, समकालीन सामाजिक-राजनीतिक परिवेश पर छह पुस्तकें, आलोचनात्मक निबंधों के चार संग्रह, मीडिया पर एक अध्ययन और एक यात्रा वृत्तांत प्रकाशित हैं। गत 38 सालों से जनसंचार में सक्रिय। वर्तमान में वे केरल के मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार, साहित्य अकादमी, दिल्ली की कार्यकारी सदस्य, केन्द्रीय साहित्य अकादमी के दक्षिण भारतीय बोर्ड के संयोजक, केरल साहित्य अकादमी के सदस्य और राष्ट्रीय साहित्य अकादमी के मलयालम सलाहकार परिषद के संयोजक हैं।

कई पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता, जिनमें आसन पुरस्कार, उल्लोर पुरस्कार, वल्लथोल पुरस्कार, विल्लोपिल्लई पुरस्कार (1990), कुंकुपिल्लई पुरस्कार (1993), कृष्णगीती पुरस्कार (1994),मूलूर पुरस्कार (1995), चंगमपुझा पुरस्कार (1997), महाकवि पी. पुरस्कारम (1997)पुरस्कार) कदवनद पुरस्कार (1999), अबुधाबी शक्ति पुरस्कार (1988), वेन्निकुलम पुरस्कार (2003), एपी कालक्कड़ पुरस्कार (2006), कन्नस्सा पुरस्कार (2011), कदथानद उदयवर्मा पुरस्कार (2006), मुल्नेझी पुरस्कार (2012) प्रेमजी पुरस्कारम् (2012), महाकवि पंडालम केरलावर्मा कविता पुरस्कारम (2016), पी. केशव देव पुरस्कार आदि प्रमुख हैं।

पता : अद्राम, 308 ए, थर्ड एवेन्यू, ए.के.जी. नगर, पेरोर्कडा पीओ, तिरुवनंतपुरम - 695005
मो. 9447060108, ई-मेल : advisorpcm@gmail.com

Smt. PRABHA VARMA

Born: 1959

Poet, littérateur, journalist and editor

Prabha Varma has a master's degree and a degree in law. An Academy award-winning Indian poet in Malayalam, he has nine collections of poems, three novels in verse, six books on the contemporary socio-political milieu and literature, four collections of essays in criticism, a study on the media, and a travelogue to his credit. He has also

been a media personality for the last 38 years. Presently he is the media advisor to the Chief Minister of Kerala, Executive member of the Sahitya Academy (National Academy of Letters, Delhi) convener of the South Indian board of Kendra Sahitya Academy, member of Kerala Sahitya Academy and the convener of Malayalam advisory council of National Sahitya Academy.

Recipient of many awards that include the Asan Prize, Ulloor Award, Vallathol Award, Vyloppilli Award (1990), Kunchupillai Award (1993), Krishnageethi Puraskar (1994), Mooloor Award (1995), Changampuzha Award (1997), Mahakavi P Puraskaram (1997), Kadavanad Award (1999), Abudhabi Shakthi Award (1988), Vennikulam Award (2003), A.P. Kalakkad Award (2006), Kannassa Puraskaram (2011), Kadathanad Udayavarma Puraskaram (2006), Mullanezhi Award (2012) Premji puraskaram (2012), Mahakavi Pandalam Keralavarma Kavitha Puraskaram (2016), P. Kesava Dev Award.

Address: Aardram, 308 A, Third Avenue,
A.K.G Nagar, Peroorkada PO,
Thiruvananthapuram - 695005.
Ph. 9447060108, e-mail: advisorpcm@gmail.com

डॉ. असग़र वजाहत

जन्म : 5 जुलाई, 1946

सामाजिक सद्भाव, एकता और सामाजिक सौहाद्र केन्द्रित रचनाओं के लिए जाने जानेवाले असग़र वजाहत साठोत्तरी पीढ़ी के बाद के महत्त्वपूर्ण कहानीकार एवं सिद्धहस्त नाटककार के रूप में मान्य हैं। कहानी, नाटक, उपन्यास, यात्रा-वृत्तान्त, फिल्म तथा चित्रकला आदि विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण रचनात्मक योगदान। संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, हिन्दी अकादेमी का श्लाका सम्मान सहित कई अन्य सम्मानों से सम्मानित व पुरस्कृत।

पता : 79, कला विहार, मयूर विहार फ़ेज-1,
नयी दिल्ली-110 091

Dr.Asghar Wajahat

Born : July 5, 1946

Completed Masters and Ph. D in Hindi from Aligarh Muslim University, Dr. Asghar Wajahat completed his post doctoral research from JNU. Penning 5 novels, 2 novellas and 3 travelogues, Dr. Wajahat is also a renowned playwright authoring 6 plays and essays.

`Saat Asman', `Kaisi Aagi Lagai', `Barkha Rachai', `Manmati' (all novels); `Main Hindu Hoon', `Democracia' (collection of short stories) are some of his famous creations. His works have been translated in many foreign and Indian languages.

Recepient of many awards and honours, he received Katha Yug Ke Samman and honour from Hindi Academy, Delhi, he has special interest in painting and travel.

79 Kala Vihar; Mayur Vihar Phase I; New Delhi-91

श्री मधुसूदन आनन्द

निदेशक, भारतीय ज्ञानपीठ एवं सम्पादक 'नया ज्ञानोदय'
जन्म : 20 दिसम्बर, 1952

कथाकार, कवि, पत्रकार और रेडियो-टीवी पर्सनेलिटी नवभारत टाइम्स और दैनिक जागरण, दिल्ली के पूर्व कार्यकारी सम्पादक और नयी दुनिया के पूर्व राष्ट्रीय सम्पादक। चार वर्षों तक जर्मनी के रेडियो डोएचे वैले में सम्पादक। करीब दो दशकों से आकाशवाणी और न्यूज चैनलों पर लगातार उपस्थिति। एम.ए. (हिन्दी)। तीन कथा-संग्रह—'करौंदे का पेड़', 'साधारण जीवन' (बाद में 'बचपन' नाम से संयुक्त रूप से प्रकाशित) और 'थोड़ा-सा उजाला'। कविता संकलन—'पृथ्वी से करें फरमाइश।' निबन्धों की पुस्तक—'जो सामने है'। 'बचपन' पर हिन्दी अकादमी दिल्ली का कृति सम्मान और मुम्बई का प्रियदर्शिनी पुरस्कार। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान (लखनऊ) का पत्रकारिता भूषण और हिन्दी अकादमी (दिल्ली) का पत्रकारिता (प्रेस) पुरस्कार।

पता : 103-ए, गौतम नगर, नयी दिल्ली-110049

Shri Madhusudan Anand

Director, Bharatiya Jnanpith & Editor, Naya Gyanoday.
Born : 20 Dec. 1952

Prolific Writer, Poet, eminent journalist and popular radio-TV personality. Ex-Executive editors of Hindi Daily Nav Bharat Times and Dainik Jagaran, Delhi, Ex. National Editor, Nai Duniya. Worked in Radio Dentsche Welle (Voice of Germany) Cologne as editor for four years. Has been participashing in debates on Radio and news-chennals. M.A. (Hindi). Has three short story collections–"Kasonde Ka Ped", Sadharsh Jeevan (Later published jointly as 'Bachpan') and 'Thora sa Ujala', Poetry book 'Prithvi Se Karlin Farmaish' and book of articles–'Jo Samane Hai'. Received Kriti Samman of Hindi Academy, Delhi and Priyadarshini Puruskar, Mumbai for Bachpan. Patrakarita Bhushan award from Uttar Pradesh Hindi Sansthan (Lucknow) and Hindi Academy (Delhi) award for Journalism (Print).

Address : 103-A, Gautam Nagar, New Delhi–110049.

भाषा परामर्श समितियाँ
Language Advisory Committees

असमिया

श्री दिनकर कुमार
मकान नं. 66, मुख्य पथ, तरुण नगर
गुवाहाटी-781 005 (असम)

श्रीमती हरकिरत 'हीर'
मकान नं. 5, 18, ईस्ट लेन, सुन्दरपुर,
गुवाहाटी-781 005 (असम)

Assamese

Shri Dinkar Kumar
House No. 66, Mukhya Path,
Tarun Nagar, Guwahati 781 005

Smt. Harkirat 'Heer'
House No. 5, 18 East Lane,
Sundarpur, Guwahati-781 005
(Assam)

बांग्ला

डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय
फ्लैट नं. 2B, ब्लॉक-सी,
79, के.डी. मुखर्जी रोड,
कोलकाता-700 060

श्री के. के. बैनर्जी
एई-600, सेक्टर-1, साल्ट लेक सिटी
कोलकाता-700 064

श्री अवीक मजुमदार
9, काशी घोष लेन, कोलकाता-700 006

Bangla

Dr. Ramkumar Mukhopadhyay
Flat 2B, Block-C,
79, K. D. Mukherjee Road,
Kolkata - 700 060

Shri K. K. Banerjee
AE-600; Sector- I, Salt Lake City,
Kolkata-700 064

Shri Aveek Majumdar
9, Kashi Ghosh Lane
Kolkata-700 006

बोडो

श्री रत्नेश्वर बसुमत्री
असम राज्य पाठ्य पुस्तक उत्पादन एवं
प्रकाशन कारपोरेशन, पान बाज़ार
गुवाहाटी-781 001 (असम)

श्री किशोर कुमार जैन
महात्मा गाँधी पथ, फैंसी बाज़ार
गुवाहाटी-781 001 (असम)

श्री जयकान्त शर्मा
18, अम्बिका गिरि नगर
गुवाहाटी-781 024 (असम)

Bodo

Shri Ratneshwar Basumatri
The Assam State Textbook Production
& Publication Corporation, Pan Bazar
Guwahati-781 001 (Assam)

Shri Kishore Kumar Jain
Mahatma Gandhi Path, Fancy Bazar
Guwahati-781 001 (Assam)

Shri Jayakant Sharma
18, Ambikagiri Nagar
Guwahati-781 024 (Assam)

डोगरी

श्री दर्शन दर्शी
शिवराम एनक्लेव, तवी विहार के सामने
सिद्रा, जम्मू तवी (जम्मू)

श्री प्रकाश प्रेमी
पराशर आश्रम, थंडा पद्दार, धर रोड,
उद्यमपुर (जम्मू ऐंड कश्मीर)

श्री मोहन सिंह
124, डोगर हॉल, जम्मू -180 001

Dogri

Shri Darshan Darshee
Shivram Enclave, Opp. Tawi Vihar,
Siddra, Jammu Tawi (Jammu)

Shri Prakash Premi
Prashar Ashram; Thanda Padder,
Dhar Road, Uddampur (J & K)

Shri Mohan Singh
124, Dogar Hall, Jammu-180 001

अँग्रेज़ी

प्रो. हरीश त्रिवेदी
डी-203, विदिशा अपार्टमेंट्स
79, आई.पी. एक्सटेंशन, दिल्ली-110 092

प्रो. मालाश्री लाल
सी-26, चिराग एनक्लेव, नयी दिल्ली-48

प्रो. एम. असादूद्दीन
प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष, अँग्रेज़ी विभाग
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जामिया नगर, नयी दिल्ली-110 025

English

Prof. Harish Trivedi
D-203, Vidisha Apartments
79, I.P. Extention, Delhi-110 092

Prof. Malashri Lal
C-26, Chiragh Enclave,
New Delhi-48

Prof. M. Asaduddin
Professor and Head,
Dept. of English Jamia Millia Islamia
Jamia Nagar,
New Delhi-110 025

गुजराती

श्री बलवन्त जानी
'तीर्थ', 264 जनकपुरी,
विश्वविद्यालय रोड,
राजकोट-360 005

प्रो. भागीरथ आर. ब्रह्मभट्ट
विभागाध्यक्ष, गुजराती विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय,
वल्लभ विद्यानगर, आनन्द,
गुजरात-388 120

डॉ. मीनाक्षी जोशी
मथुरा, रामायण नगरी, खाट रोड,
भंडारा-441 904 (महाराष्ट्र)

Gujarati

Shri Balvant Jani
"Tirth", 264, Janakpuri,
University Road,
Rajkot-360 005

Prof. Bhagirath R. Brahmbhatt
Head, Dept. of Gujarati
Sardar Patel University
Vallabh Vidyanagar
Anand-388 120 (Gujarat)

Dr. Minakshi Joshi
Mathura, Ramayan Nagari,
Khat Road,
Bhandara- 441 904
(Maharashtra)

हिन्दी

डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी
बी-5, एफ-2, दिलशाद गार्डेन,
दिल्ली-110 095

श्री महेश दर्पण
सी-3/51, सादतपुर, दिल्ली-110094

श्री विष्णु नागर
ए- 34 नवभारत टाइम्स अपार्टमेंट मयूर
विहार, फेस-1 दिल्ली-110091

Hindi

Dr. Vishwanath Tripathi
B-5, F-2, Dilshad Garden
Delhi-110 095

Shri Mahesh Darpan
C-3/51, Sadatpur, New Delhi-110 094

Shri Vishnu Nagar
A-34, Nav Bharat Times Apartment
Mayur Vihar, Phase I, Delhi-110091

कश्मीरी

श्री रफीक राज़
आई.जी. रोड, बागहाट, श्रीनगर,
जम्मू एवं कश्मीर

डॉ. शिब्बन कृष्ण रैना
2/537, एचआईजी, राजस्थान हाउसिंग बोर्ड
अरावली विहार, अलवर-301 001
(राजस्थान)

श्री मलिक बशीर अथर
न्यूज़ हाउस, नं. 404, वार्ड नं. 3, शिवपुरा, ब्रॉडवे, श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर

Kashmiri

Shri Fafiq Raaz
I.G. Road, Baghaat
Srinagar, Jammu & Kashmir

Dr. Shiban Krishna Raina
2/537, HIG, Rajasthan Housing Board
Aravali Vihar, Alwar-301 001

Shri Malik Bashir Athar
News House No. 404, Ward No. 3, Sivpora, Braoadway, Srinagar, Jammu & Kashmir

कन्नड़

डॉ. सिद्धलिंगैया
398, बनवासी, 4था क्रॉस,
43वाँ मेन, आइडियल होम टाउनशीप,
राजराजेश्वरी नगर
बैंगलोर-560 098 (कर्नाटक)

प्रो. नगन्ना
निदेशक, प्रासारंगा,
मैसूर विश्वविद्यालय,
हंसूर रोड, मैसूर (कर्नाटक)

डॉ. सी.पी. कृष्णकुमार
नं. 2265/19, 'भारती', 6वाँ क्रॉस, 4था मेन,
विनायक नगर, मैसूर-570012

Kannada

Dr. Siddalingaiah
398 Banavasi, 4th Cross, 43rd Main
Ideal Home Township, Rajarajeshwari Nagar, Banglore-560098

Prof. Naganna
Director, Prasaranga, University of Mysore, Hunsur Road, Mysore, Kar.

Dr. C.P. Krishnakumar
No. 2265/19 Bharati 6th cross
4th Main, Vinayakanagar
Mysore-570012

कोंकणी

श्री प्रसाद लोलायकर
टी-1, तीसरा तल, राज कॉम्प्लेक्स, वोडलेम भट्ट, तालेईगाँव, तिसवाडी 403 001

श्री मैल्विन राड्रिग्ज़
कविता प्रकाशन
403, वीनस प्राइम, कादरी कम्बला रोड
पिंटो लेन, बेजई, मंगलोर-575 004

Konkani

Shri Prasad Lolayekar
T1, 3rd Floor, Raj Complex, Vodlem Bhatt, Taleigao, Tiswadi 403 001

Shri Melvyn Rodrigues
Kavita Publications, 403, Venus Prime
Kadri Kambla Road, Pinto Lane, Bejai
Mangalore-575 004

मणिपुरी

श्रीमती ई. विजयलक्ष्मी
मोइरादजोय, मोकुलमकोड
इम्फाल-795 001

Manipuri

Smt. E. Vijayalakshmi
Moiraadjoy, Mokulmakhod
Imphal-795 001

मैथिली

श्री शोभा कान्त
न्यू ख्वाज़ा सराय, लहरिया सराय
दरभंगा-846 001

श्री गौरीनाथ
सी 56/यूजीएफ-4, शालीमार गार्डन एक्स. II
गाज़ियाबाद-201 005

Maithili

Shri Shobha Kant
New Khwaja Sarai, Laheria Sarai
Darbhanga-846 001

Shri Gaurinath
C 56/UGF-4, Shalimar Gardens
Ext. II, Ghaziabad-201 005

मलयालम

डॉ. डी. बेंजामिन
पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, मलयालम
केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम

डॉ. छटानाथ अच्यूतमुन्नी
पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष मलयालम
कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट

डॉ. आरसू
भूतपूर्व प्रो. एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी
कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट

Malayalam

Dr. D. Benjamin
Former Prof. & HoD Malayalam;
University of Kerala, Trivandrum

Dr. Chathanath Achuthanunni
Former Prof. & HoD Malayalam,
University of Calicut, Calicut

Dr. Arsu
Former Prof. & HoD Hindi
University of Calicut, Calicut

मराठी

श्रीमती पुष्पा भावे
6, राधा मन्दिर, 213 सर भालचन्द्र रोड
माटुंगा (ईस्ट), मुम्बई-400 019

श्री प्रफुल्ल शिलेदार
6-ए, दामोदर कॉलोनी, सुरेन्द्र नगर
नागपुर-440 015

श्री जयन्त पवार
सी-811, भूमि ग्रीन, रहेजा इस्टेट
कुलुपवाड़ी, बोरीवली (ईस्ट)
मुम्बई-400 066

Marathi

Smt. Pushpa Bhave
6, Radha Mandir
213, Sir Bhalchandra Road
Matunga (E)
Mumbai - 400 019

Shri Prafull Shiledar
6-A, Damodar Colony
Surendra Nagar,
Nagpur-440 015

Shri Jayant Pawar
C-811, Bhoomi Green,
Raheja Estate
Kulupwadi, Borivali (E)
Mumbai-400 066

नेपाली

प्रो. नर बहादुर राय
विभागाध्यक्ष, नेपाली विभाग
शिलांग विद्यालय, शिलांग-793 003
(मेघालय)
निवास : द्वारा टाइनीज़ कार्नर स्कूल,
नांगमेनसांग, शिलांग-793 011

श्री बुद्धदेव दीवान
आगम सिंह गिरि नगर, पंचनदी
पो. ऑ. प्रधान नगर, सिलीगुड़ी
दार्जिलिंग-734 403

श्री मोहन ठाकुरी
भानुटोल, मुंगपू, दार्जिलिंग-734 313

Nepali

Prof. Nar Bahadur Rai
Head, Dept. of Nepali
Shillong College,
Shillong-793 003 (Meghalaya)
C/o Tiny's Corner School,
Nongmynsong, Shillong-793 011

Shri Buddhadev Dewan
Agam Singh Giri Nagar,
Panchanadi
P.O. Pradhan Nagar
Siliguri, Darjeeling - 734 403

Shri Mohan Thakuri
Bhanutol, Mungpoo
Darjeeling-734 313

ओड़िया

प्रो. प्रफ्फुल कुमार मोहांती
चित्रकाव्य, 365/2787, शिशु विहार, पातिया,
पो. केआईआईटी, भुवनेश्वर-751 024

प्रो. बसंत कुमार पंडा
बी/102, लाईफ स्टाइल ग्रीन अपार्टमेंट,
केआईआईटी स्क्वायर, पातिया, भुवनेश्वर-
751 024
माझी सही, जोबरा, कटक-753 003

प्रो. रंजीता कुमारी नायक
1501, महानदी विहार, कटक-753 004

Oriya

Prof. Prafulla Kumar Mohanty

Chitrakavya, 365/2787, Shishu Vihar
Patia, P.O. KIIT, Bhubaneshwar-751 024

Prof. Basanta Kumar Panda
B/102, Life Style Green Apartment
KIIT Square, Patia, Bhubaneshwar-751 024

Prof. Ranjita Kumari Nayak
1501, Mahanadi Vihar,
Cuttack-753 004

पंजाबी

श्री देश निर्मोही
आधार प्रकाशन (प्रा.) लि.
एससीएफ 267, सेक्टर 16
पंचकुला-134 113

श्री तरसेम
बी-IV/814, दशमेश गली
निकट गाँधी आर्य हाई स्कूल
बरनाला-148 101

Punjabi

Shri Desh Nirmohi
Adhar Prakashan (P) Ltd.
SCF-267, Sector 16
Panchkula-134 113

Shri Tarsem
B- IV / 814, Dashmesh Gali
Near Gandhi Arya High School
Barnala-148 101

संस्कृत

डॉ. महावीर अग्रवाल
22, नन्द विहार
पो. गुरुकुल कांगड़ी,
हरिद्वार-249 404

डॉ. भीम सिंह
1839-ए/8, शीला कॉलोनी,
अमीन रोड, कुरुक्षेत्र-136 119

डॉ. सुभाष विद्यालंकार
पूर्व उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.
डी-6, गुलमोहर पार्क
नयी दिल्ली-110 049

Sanskrit

Dr. Mahavir Aggarwal
22, Nand Vihar
P.O. Gurukul Kangri
Haridwar-249404

Dr. Bhim Singh
1839-A/8, Sheela Colony
Amin Road, Kurukshetra-136 119

Dr. Subhash Vidyalankar
D-6, Gulmohor Park
New Delhi-110 049

सन्थाली

डॉ. प्रमोदिनी हांसदा
प्रो-वाइस चांसलर
सिदो-कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय
दुमका-814 101 (झारखंड)

श्रीमती निर्मला पुतुल
दुधानी कुर्वा
दुमका-814 101 (झारखंड)

डॉ. कृष्णचन्द्र टुडु
विश्वविद्यालय आवास कॉलोनी
मकान नं. 9/10, बरियातु
राँची-834 009 (झारखंड)

Santhali

Dr. (Smt.) Pramodini Hansda
Pro-Vice Chancellor,
Sido-Kanhu Murmu University
Dumka - 814 101 (Jharkhand)

Smt. Nirmala Putul
Dudhani Kurwa
Dumka-814 101

Dr. Krishna Chandra Tudu
University Housing Colony
F. N. 9/10, Bariatu
Ranchi - 834 009 (Jharkhand)

सिन्धी

श्री लक्ष्मण दुबे
309 सी, नताशा सोसायटी
पुराने पेट्रोल पम्प के सामने
मीरा भयंदर रोड, भयंदर (ईस्ट)
मुम्बई-401 105

श्री ढोलण राही
6 सेवार हाउस, श्रीनगर रोड
अजमेर-305 008

श्री वसदेव मोही
ए–3555 नयन नगर, सहिजपुर बोघा
अहमदाबाद 382 345

Sindhi

Shri Laxman Dubey
309-C, Natasha Society
Opp. Old Petrol Pump
Mira Bhayandar Road
Bhayandar (E), Mumbai-401105

Shri Dholan Rahi
6, Sawar House
Srinagar Road, Ajmer-365 008

Shri Vasdev Mohi
6A-3555 Nayan Nagar,
Sahijpur Bogha,
Ahmedabad - 382 345

तमिल

डॉ. एम. तिरूमलाई
एफ–217, शान्ति सदन रेजीडेंसी, कोचदाई, मदुराई–625 016

डॉ. एन. अरुल
जे–82, अन्ना नगर, ईस्ट, चैन्नई–600 102

डॉ. दामोदरन (अरवेंदन)
प्रो. तमिल, भारतीय भाषा केन्द्र, भाषा, साहित्य और संस्कृति अध्ययन संस्थान, जेएनयू, नई दिल्ली–110 067

Tamil

Dr. M. Thirumalai
F-217, Shanthi Sadhan Residency,
Kochadai, Madurai 625 016

Dr. N. Arul
J-82, Anna Nagar East,
Chennai 600102

Dr. Thamotharan (Aravendan)
Professor of Tamil, Centere of Indian Languages, SLL&CS, Jawaharlal Nehru University, New Delhi-110067

तेलुगु

प्रो. सी. सुब्बा राव
128/8, एम.वी.पी. कॉलोनी
विशाखापटनम–530 017

डॉ. वीणा वल्लभ राव
41–1/6–57, गौतमीनगर, दूसरा लेन,
कृष्णलंका, विशाखापटनम–530 013

श्री ए. कृष्णा राव
एसोशिएट एडिटर, 106, आईएनएस बिल्डिंग
रफ़ी मार्ग, नयी दिल्ली–110 001

Telugu

Prof. C. Subba Rao
128/8, M.V.P. Colony,
Vishakhapatnam-530017

Dr. Veena Vallabha Rao
41-1/6-57 Gowthaminagar; 2nd Lane
Krishnalanka,
Vijayawada-530 013

Shri A. Krishna Rao
Associate Editor, 106, INS Building
Rafi Marg, New Delhi- 110 001

उर्दू

श्री शीन काफ़ निज़ाम
कल्ला गली,
जोधपुर–342 001

श्री जानकी प्रसाद शर्मा
बी–330, अशोक नगर, शाहदरा
दिल्ली–110 093

Urdu

Shri Sheen Kaaf Nizam
Kalla Street
Jodhpur-342 001

Shri Janki Prasad Sharma
B-330, Ashok Nagar
Shahadara, Delhi-110 093

वर्ष 2019 की चयन–प्रक्रिया में हिन्दी और अँग्रेज़ी सम्मिलित नहीं रहीं।

Hindi and English were not in the reckoning for the year 2019.

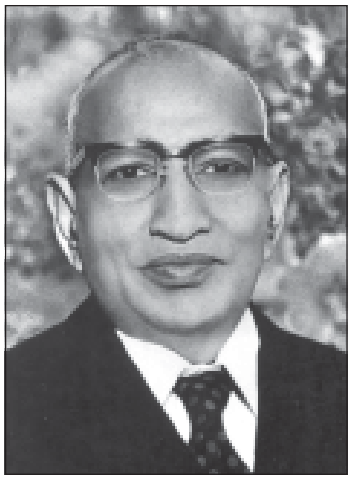

भारतीय ज्ञानपीठ के संस्थापक
स्व. साहू शान्तिप्रसाद जैन

भारतीय ज्ञानपीठ की संस्थापक-अध्यक्ष
स्व. श्रीमती रमा जैन

भारतीय ज्ञानपीठ
Bharatiya Jnanpith

अखिल भारतीय प्राच्यविद्या परिषद् के बारहवें अधिवेशन के अवसर पर दिसम्बर 1943 में वाराणसी में कुछ अग्रणी भारतीय विद्याविदों ने साहू शान्तिप्रसाद जैन से एक ऐसे संस्थान की स्थापना का अनुरोध किया जो संस्कृत के साथ-साथ प्राकृत, पालि और अपभ्रंश की साहित्य-निधि का अनुसन्धान एवं प्रकाशन कर सके। उत्तर में, भारतीय विद्या और संस्कृति के प्रति अपने हार्दिक लगाव के अनुरूप ही साहूजी ने भारतीय ज्ञानपीठ की स्थापना का निर्णय लिया। 18 फरवरी, 1944 को एक न्यास के रूप में इस संस्थान का घोषणापत्र पंजीकृत हुआ जिसमें अंकित उद्देश्य था—'ज्ञान की विलुप्त, अनुपलब्ध और अप्रकाशित सामग्री का अनुसन्धान और प्रकाशन तथा लोक-हितकारी मौलिक साहित्य के निर्माण को प्रोत्साहन।'

भारतीय ज्ञानपीठ आरम्भ से ही इस उद्देश्य-युगल की पूर्ति के लिए समर्पित रहा है। उसके अनुसन्धान और प्रकाशन का शुभारम्भ हुआ एक महाग्रन्थ के पुनरुद्धार से। मूडबिद्री, कर्नाटक के एक मन्दिर में शताब्दियों

On the occasion of the 12th All India Oriental Conference held at Varanasi in December 1943, a few leading Indologists approached Sahu Shanti Prasad Jain for the setting up of an organisation to undertake systematic research and publication of Sanskrit, Prakrit, Pali and Apabhramsha texts. Sahuji's response, characteristic of his deep love for learning and cultural heritage, took the practical shape in setting up of Bharatiya Jnanpith. The Deed of Declaration, dated 18th February, 1944 establishing the organisation, stated its objectives : to conduct researches so as to bring out the extinct and rare works of knowledge and to encourage creation of original contemporary literature for the benefit of the people.

Since its inception, the Bharatiya Jnanpith has been working devotedly for the fulfilment of its twin objectives. Its research and publication programme started with the resurrection of a

से एक ताड़पत्रीय पाण्डुलिपि विद्यमान थी। उसमें क्या अंकित है, यह किसी को मालूम नहीं था। भारतीय ज्ञानपीठ के भगीरथ प्रयत्न से जब वह विधिवत् सम्पादित होकर प्रकाशित हुई तब पता चला कि उस पाण्डुलिपि में दूसरी शताब्दी ई. का प्राकृत ग्रन्थ 'षट्खण्डागम' और उसकी नौवीं शताब्दी की प्राकृत-संस्कृत में टीका अंकित है। इसमें कर्म-सिद्धान्त का विवेचन है। इसका अन्तिम छठा खण्ड 'महाबन्ध' भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा हिन्दी अनुवाद के साथ सात भागों में, लगभग तीन हजार पृष्ठों में, प्रकाशित किया गया।

मूर्तिदेवी ग्रन्थमाला का श्रीगणेश इसी महाग्रन्थ से हुआ। तबसे इसमें भारतीय चिन्तन, संस्कृति और धर्म के अनेक दुर्लभ ग्रन्थ वैज्ञानिक पद्धति से सम्पादित होकर प्रकाशित हो रहे हैं। संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश, तमिल, कन्नड़, हिन्दी और अँग्रेजी में प्रकाशित ये ग्रन्थ धर्म, दर्शन, न्याय, नीतिशास्त्र, आचारशास्त्र, कर्मकाण्ड, व्याकरण, ज्योतिष, काव्यशास्त्र आदि विषयों से सम्बद्ध हैं। इस ग्रन्थमाला को प्रो. ए. चक्रवर्ती, डॉ. हीरालाल जैन, डॉ. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, डॉ. ज्योति प्रसाद जैन आदि धुरन्धर विद्वानों के निर्देशन और सम्पादन का लाभ प्राप्त हुआ।

हमारे प्राचीन आचार्यों की महान उपलब्धियों को भाषा और साहित्य की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन के साथ प्रस्तुत करना इस ग्रन्थमाला की एक उल्लेखनीय विशेषता है। सातवीं शताब्दी के आचार्य रविषेण का संस्कृत 'पद्मपुराण', स्वयम्भू का अपभ्रंश 'पउमचरिउ', बारहवीं शताब्दी के कवि नागचन्द्र का कन्नड़ 'रामचन्द्र-चरित-पुराण' और सोलहवीं शताब्दी के देवप्पा कवि का कन्नड़ 'रामविजयकाव्य' रामकथा पर आधारित हैं। इसी प्रकार नौवीं शताब्दी के आचार्य जिनसेन और गुणभद्र के संस्कृत 'महापुराण' (आदिपुराण और उत्तरपुराण) और दसवीं शताब्दी के महाकवि पुष्पदन्त के अपभ्रंश 'महापुराण' में तिरेसठ शलाका-पुरुषों के चरित का चित्रण है। स्वयम्भू की अपभ्रंश की एक और अक्षय कृति 'रिट्ठणेमि-चरिउ' का प्रथम भाग प्रकाशित हो चुका है।

इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर ज्ञानपीठ ने माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला को भी अपने कार्यक्रम में समाविष्ट कर लिया। इस ग्रन्थमाला के अन्तर्गत, मुम्बई से कुछ संस्कृत एवं प्राकृत ग्रन्थ समीक्षात्मक ढंग से सम्पादित और प्रकाशित किए गए थे। बाद में ज्ञानपीठ ने भी इस शृंखला में कुछ और पुस्तकें जोड़ीं।

monumental classic. A temple at Moodbidri in Karnataka, had stored for centuries an unidentified manuscript of palm-leaves. The Jnanpith's painstaking research revealed that it was a ninth century commentary in Prakrit and Sanskrit, of a second century A.D. work, *Sat-khandagama*, in Prakrit on the doctrine of *karman*. The final, sixth part of this great work, *Mahabandha*, has been published in seven volumes, comprising three thousand pages, by Bharatiya Jnanpith.

This was the beginning of the Moortidevi Grantha-mala, which has, since then brought out, in scientifically edited form, rare works on Indian thought, culture and religion. These works are in Sanskrit, Prakrit, Pali, Apabhramsha, Tamil, Kannada, Hindi and English, covering subjects like religion, philosophy, logic, ethics, grammar, astrology, poetics etc. The series had, for guidance and editorship, outstanding scholars like Prof. A Chakravarty, Dr. H.L. Jain, Dr. A.N. Upadhye, Pt. Kailash Chandra Shastri and Dr. Jyoti Prasad Jain.

A distinctive feature of these publications has been to produce comparative linguistic and literary studies of our rich ancient lore. The *Padma-purana* of Acharya Ravisena (Sanskrit, 7th century A.D.), Apabhramsha *Paramchariu* of Svayambhu the *Rama-chandra-charita-purana* of Nagachandra (Kannada, 12th century A.D.) and the *Rama-vijaya-kavya* of Devappa Kavi (Kannada, 16th century A.D.), all relate to the Rama-katha. Similarly the *Maha-purana* (*Adi-purana* and *Uttarpurana*) of Acharya Jinasena and Gunabhadra (Sanskrit, 9th century A.D.) and the *Maha-purana* of Pushpadanta (Apabhramsha, 10th cenutry A.D.) deal with an identical lore of the sixtythree very distinguished persons of Jain mythology. Another great work, Svayambhu's *Rittha-nemi-chariu* (Apabhramsha), which had long remained inaccessible to readers; its first part has also been published.

With this objective in view, Bharatiya Jnanpith took over the Manikchandra Granthamala, which had published a series of critically edited Sanskrit and Prakrit texts from Mumbai. Some new additions have been made by the Jnanpith to the series subsequently.

कन्नड़ ग्रन्थमाला का सूत्रपात भी किया गया, जिसके अन्तर्गत इस भाषा के प्राचीन ग्रन्थों का आधुनिक कन्नड़ में सम्पादन-प्रकाशन हुआ और विद्वानों को शोध के नए क्षेत्र उपलब्ध हुए। कर्नाटक में पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण के बाद ज्ञानपीठ ने 'कन्नड़प्रान्तीय ताड़पत्रीय ग्रन्थसूची' का प्रकाशन किया जो शोध और अध्ययन में बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही है। साहित्य के प्राचीन भण्डारों के शोध और अध्ययन-प्रोत्साहन की दृष्टि से ज्ञानपीठ के संस्थापक साहू शान्तिप्रसाद जैन ने उस समय सात लाख रुपयों के अनुदान से वैशाली में 'प्राकृत, जैनविद्या और अहिंसा शोध संस्थान' की स्थापना में बिहार शासन की सहायता की और मूडबिद्री में 'श्रीमती रमा जैन शोध संस्थान' की स्थापना के लिए भी उन्होंने विपुल धनराशि अनुदान में दी।

समसामयिक कृतियों का प्रकाशन हिन्दी कृतियों तक ही सीमित नहीं है। आरम्भ से ही ज्ञानपीठ का यह विचार रहा है कि एक भाषा-भाषी को अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य उपलब्ध होना चाहिए। इसलिए राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला के अन्तर्गत 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित तथा अन्य विशिष्ट साहित्यकारों की कृतियों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किए जाते हैं। इस प्रकार यह ग्रन्थमाला समकालीन भारतीय साहित्य की चुनी हुई कृतियाँ न केवल हिन्दी पाठकों को उपलब्ध कर रही है, प्रत्युत उनके अन्य भाषाओं में अनुवाद का मार्ग भी सुगम बना रही है।

भारतीय ज्ञानपीठ सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्रों में अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर भी कार्य करता है।

लेकिन साहित्य के क्षेत्र में इसका सबसे प्रमुख और उल्लेखनीय कार्य है वार्षिक 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' जो किसी भी भारतीय नागरिक को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में परिगणित किसी भी भाषा के सर्वश्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य के लिए दिया जाता है। वर्तमान में इस पुरस्कार की राशि ग्यारह लाख रुपये है। यह पुरस्कार श्रीमती रमा जैन का मानसपुत्र है। वे भारतीय ज्ञानपीठ की प्रथम अध्यक्ष तो थीं ही, उसके स्थापनाकाल से ही उसकी गतिविधियों की प्रेरणास्रोत भी रहीं। ज्ञानपीठ पुरस्कार देश का सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार माना जाता है।

भारतीय ज्ञानपीठ ने 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' के नाम से एक और पुरस्कार का भी प्रवर्त्तन किया है। साहू शान्तिप्रसाद जैन की मातृश्री के नाम पर इस पुरस्कार का नामकरण हुआ है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष किसी ऐसी चिन्तनपरक कृति के लिए दिया जाता है जो भारतीय दर्शन तथा सांस्कृतिक

The Kannada Granthamala was started to bring out classic works of Kannada with translation in modern Kannada to provide scholars with new horizons of research. Jnanpith also undertook a survey of ancient manuscripts in Karnataka and published a catalogue of palm-leaf manuscripts, which continues to be of great help for research. With a view to encourage academic studies on these old treasures of literature, Sahu Shanti Prasad Jain, the Founder of the Jnanpith, helped the government of Bihar with a generous donation of Rs. 7 lakh, in establishing the Institute of Prakrit, Jainology and Ahimsa, at Vaishali and gave another big donation towards founding of the Smt. Rama Rani Jain Institute of Research, at Moodbidri, Karnataka.

The publication of contemporary literature is not confined to Hindi alone. Jnanpith has always felt that our people should have access to the literature of other languages, too. It is with this idea that Jnanpith started Rashtrabharati Granthamala, which publishes Hindi translations of works of Jnanpith Laureates and other eminent writers of various Indian lanugages. The Granthamala is thus not only making works of the best contemporary Indian literarure accessible to the Hindi readers but is also making its translation into other Indian languages easier.

Bharatiya Jnanpith has always joined other organisations in significant cultural and literary projects.

But its crowning glory continues to be the annual 'Jnanpith Award', given for lifetime contribution towards Indian Literature to any Indian citizen in any of the languages included in the VIII Schedule of the Indian Constitution. At present, the Award is of Rupees 11 lakh. The Award is the brain-child of Smt. Rama Jain, the first President of, and the moving spirit behind, the Bharatiya Jnanpith since its inception. Jnanpith Award has become the most prestigious literary award of the country.

Bharatiya Jnanpith has instituted another award, 'Moortidevi Puraskar', named after the revered mother of Sahu Shanti Prasad Jain. This award is presented every year for a contemplative work which expresses, underlines and illuminates human values rooted

धरोहर के व्यापक आदर्शों पर आधारित मानवीय मूल्यों को निरूपित, रेखांकित और अभिव्यंजित करती हो। कुछ समय तक यह पुरस्कार ऐसी सर्जनात्मक कृतियों को भी दिया जाता रहा जो जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा करती रही हों।

प्रथम पुरस्कार (वर्ष 1983) प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यास 'पट्टमहादेवी शान्तला' के लिए श्री सी.के. नागराज राव को प्रदान किया गया। ज्ञानपीठ से यह उपन्यास हिन्दी में चार भागों में प्रकाशित हुआ है। बाद में यह पुरस्कार श्री वीरेन्द्रकुमार जैन को उनके उपन्यास 'मुक्तिदूत' (हिन्दी), श्री मनुभाई पंचोली को उनकी कृति 'झेर तो पीधां छे जाणी जाणी' (गुजराती), श्री कन्हैयालाल सेठिया को उनके कविता-संग्रह 'निर्ग्रन्थ' (हिन्दी,) श्री विष्णु प्रभाकर को उनके नाटक 'सत्ता के आर-पार' (हिन्दी), डॉ. विद्यानिवास मिश्र को 'महाभारत का काव्यार्थ' (हिन्दी), मुनिश्री नगराज को 'आगम और त्रिपिटक' (हिन्दी), डॉ. प्रतिभा राय को उनके उपन्यास 'याज्ञसेनी' (उड़िया), श्री कुबेरनाथ राय को उनके निबन्ध-संग्रह 'कामधेनु' (हिन्दी), प्रो. श्यामाचरण दुबे को 'परम्परा, इतिहास-बोध और संस्कृति' (हिन्दी), श्री शिवाजी सावन्त को उनके उपन्यास 'मृत्युंजय' (मराठी) तथा श्री निर्मल वर्मा को 'भारत और यूरोप : प्रतिश्रुति के क्षेत्र' (हिन्दी), डॉ गोविन्द चन्द्र पाण्डे को 'साहित्य, सौन्दर्य और संस्कृति' (हिन्दी), डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी को 'गुरु महिमा' (हिन्दी), डॉ. यशदेव शल्य को 'मूल्य तत्त्व मीमांसा' (हिन्दी), श्री नारायण देसाई को 'मारु जीवन ए ज मारी वाणी' (गुजराती), प्रो. राममूर्ति शर्मा को 'भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा' (हिन्दी) डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र को 'कल्पतरु की उत्सव लीला' (हिन्दी), डॉ. एम. वीरप्पा मोइली को 'श्री रामायण महान्वेषणम्' (कन्नड़), डॉ. रघुवंश को 'पश्चिमी भौतिक संस्कृति का उत्थान और पतन' (हिन्दी), मलयालम कवि अक्कितम अच्युतन नम्बूदिरी को उनकी काव्य कृति 'अक्कितम कवित्तकल', प्रो. गोपीचन्द नारंग को उनकी उर्दू कृति 'उर्दू ग़ज़ल और हिन्दुस्तानी ज़ेहन-ओ-तहज़ीब' के लिए, डॉ. गुलाब कोठारी को उनके हिन्दी खंड काव्य 'मैं ही राधा, मैं ही कृष्ण' के लिए, ओड़िया कवि हरप्रसाद दास को उनकी कृति 'वंश', मलयालम लेखक सी. राधाकृष्णन को 'तीक्कटल् कटंजु तिरुमधुरम्', हिन्दी के लेखक डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी को 'व्योमकेश दरवेश', प्रो. के. इनाक की कृति 'अनन्त जीवनम्' तथा श्री एम. पी. वीरेन्द्र कुमार को उनकी कृति 'हिमवथ भुविल' in the broad vision of Indian philosophy and cultural heritage. The objective of the Award is to foster social and individual commitment to higher values of life through the medium of literature in its larger sense.

The first Moortidevi Puraskar for the year 1983 was given to Shri C.K. Nagaraja Rao for his famous Kannada novel *Pattamahadevi Shantala*. Jnanpith has brought out this great work in Hindi in four volumes. This award has subsequently gone to Shri Virendra Kumar Jain for his novel *Muktidoot* (Hindi), Shri Manubhai Pancholi for *Zer to Pidhan Chhe Jani Jani* (Gujarati), Shri Kanhaiya Lal Sethia for *Nirgranth* (Hindi), Shri Vishnu Prabhakar for his drama *Satta ke Aarpaar* (Hindi), Dr. Vidya Niwas Mishra for *Mahabharat ka Kavyartha*, Munisri Nagaraja for *Aagam aur Tripitak* (Hindi), Dr. Pratibha Rai for her Oriya novel *Yajnaseni*, Shri Kubernath Rai for his collection of essays *Kamdhenu* (Hindi), Prof. S.C. Dubey for *Parampara*, *Itihas-bodh aur Sanskriti* (Hindi), Shri Shivaji Sawant for his Marathi novel *Mrityunjaya,* to Shri Nirmal Verma for his collection of essays *Bharat aur Europe* : *Pratishruti ke Kshetra* (Hindi). Dr. Govind Chandra Pandey for his 'Sahitya, Saundarya and Samskriti' (Hindi), Dr. Rammurti Tripathi for his 'Guru Mahima' (Hindi), Dr. Yashdev Shalya for his 'Mulya Tatva Mimansa', Shri Narayan Desai for his 'Maru Jeevan ei je Mari Vani' (Gujarati), Prof. Rammurti Sharma for his 'Bharatiya Darshan Ki Chintan Dhara' (Hindi), Dr. Krishna Bihari Mishra for 'Kalpataru Ki Utsavalila' (Hindi), Dr. M. Veerappa Moily for 'Shri Ramayana Mahanveshanam' (Kannada), Prof. Raghu-vansh for 'Pashchimi Bhoutika Sanskriti Ka Utthan aur Patan' (Hindi); Malayalam Poet Akkitham Achuthan Namboothiri for his poetry 'Akkitham Kavittakala', Prof. Gopichand Narang for his work 'Urdu Ghazal aur Hindus-tani zehan-O-Tahzeeb' (Criticism), Dr. Gulab Kothari for his Hindi Poetry 'Mein Hi Radha, Mein Hi Krishna' (Khand-kavya), Oriya Poet Shri Haraprasad Das for his 'Vansha' Malayalam author C. Radhakrishnan for his work 'Theekkadal Katanju Thirumadhuram', Dr. Vishwanath tripathi for his work 'Vyomkesh Darvesh, Prof. K. Enoch for 'Ananta Jeevanam' and Shri M.P. Veerendra kumar for his work 'Hymvatha bhovil'.

को समर्पित किया गया।

समकालीन मौलिक साहित्य के निर्माण को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से विविध कार्यक्रमों का प्रारम्भ हुआ। लोकोदय ग्रन्थमाला का उनमें विशेष महत्त्व है। भारतीय ज्ञानपीठ ने सदा व्यावसायिक प्रकाशनों द्वारा उपेक्षित-प्राय नवोदित प्रतिभाओं के संवर्धन के लिए विशेष प्रयास किये हैं। यह ज्ञानपीठ के लिए गौरव की बात है कि उसे आज के कई लब्ध-प्रतिष्ठ लेखकों की प्रथम अथवा प्रारम्भिक कृति प्रकाशित करने का श्रेय है। इनमें कुछेक लेखक हैं—अज्ञेय, धर्मवीर भारती, मुक्तिबोध, निर्मल वर्मा, अध्योध्या प्रसाद गोयलीय, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', मोहन राकेश, कुँवर नारायण, रघुवीर सहाय, राजेन्द्र यादव, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, मन्नू भंडारी, नेमिचन्द्र जैन, वीरेन्द्र कुमार जैन, अशोक वाजपेयी, कैलाश वाजपेयी, इन्दु जैन।

युवा लेखकों को प्रोत्साहन देने की भारतीय ज्ञानपीठ की परम्परा का निर्वहन करते हुए नवलेखन पुरस्कार की स्थापना की गयी। यह कहना गलत न होगा कि ज्ञानपीठ ने अगली सदी के लेखकों को प्रोत्साहन देने तथा युवा लेखकों की नयी पीढ़ी तैयार करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। भारतीय ज्ञानपीठ ने न केवल इन युवा लेखकों को पुरस्कृत किया बल्कि उनकी प्रथम कृतियाँ भी प्रकाशित कीं। इनमें से अनेक लेखकों ने लेखन से अपनी राष्ट्रीय पहचान बनायी। शशिभूषण द्विवेदी, राजुला शाह, नीलाक्षी सिंह, अल्पना मिश्र, चन्दन पांडेय, कुणाल सिंह, पंकज सुबीर, मनोज कुमार पांडेय, उमाशंकर चौधरी, रविकान्त, निर्मला पुतुल और निशान्त आदि युवा लेखकों की अब तक अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ का एक न्यास द्वारा संचालित संस्था है। □

The objective of encouraging creation of original modern literature is sought to be achieved through several of programmes, the most important being the Lokodaya Granthamala. It has been the endeavour of Jnanpith to highlight the emerging talent whose writings are generally ignored by commercial publishers. Bharatiya Jnanpith can justifiably feel proud of the fact that it has helped a number of writers, who have acquired eminence today, in their formative years. Some of them are : Ajneya, Dharmavir Bharati, Muktibodh, Ayodhya Prasad Goyaliya, Kanhaiya Lal Mishra 'Prabhakar', Mohan Rakesh, Kunwar Narain, Raghuveer Sahaya, Rajendra Yadav, Sarveshwar Dayal Suxena, Mannu Bhandari, Nemichand Jain, Virendra Kumar Jain, Ashok Vajpeyi, Kailash Vajpeyi and Indu Jain. The first or early work of these writers has been published by Bharatiya Jnanpith.

Continuing the legacy, Bharatiya Jnanpith introduced a new prize, namely 'Navlekhan Puraskar', for motivating the young authors writing in Hindi. It will not be out of context to mention that Bharatiya Jnanpith is continuing its mission of creating the 'Gen next' of authors by providing them with awards, motivation and a platform by publishing their first creations. Many of the next generation authors like Shashi Bhushan Dwivedi, Rajula Shah, Neelakshi Singh, Alpana Mishra, Chandan Pandey, Kunal Singh, Pankaj Subeer, Manoj Kumar Pandey, Umashankar Chaudhary, Ravikant, Nirmala Putul and Nishant have already made their presence felt in the literary circle. Jnanpith has, so far, published a sizeable number of books by young authors.

Bharatiya Jnanpith is managed by a Trust. □

न्यासि-मंडल

श्रीमती इन्दु जैन (मानद् अध्यक्ष)
जन्म : 1936, फैज़ाबाद (उ.प्र.), समाजसेवी
पता : 6, सरदार पटेल मार्ग,
नयी दिल्ली-110 021

न्यायमूर्ति विजेन्द्र जैन (अध्यक्ष)
जन्म : 1946, न्यायाधीश (सेवानिवृत्त)
पता : बंगला नं. 136, सेक्टर-15ए,
नोएडा-201 301 (उत्तर प्रदेश)

श्रीमती अपराजिता जैन महाजन (आजीवन न्यासी)
जन्म : 1980, कलाकार
पता : डी-15, महारानी बाग,
नयी दिल्ली-110 065

श्रीमती त्रिशला जैन (आजीवन न्यासी)
जन्म : 1985, व्यवसाय
पता : 15, मोती लाल नेहरू मार्ग,
नयी दिल्ली-110 011

श्री स्वदेश भूषण जैन (न्यासी)
जन्म : 1946
कार्यकारी अध्यक्ष, दैनिक समाचार पत्र
पता : ई-82, अशोक विहार,
फेज़-1, दिल्ली-110 052

श्री एस.के. जैन, आई.पी.एस. (न्यासी)
जन्म : 1951
पता : एन-86, पंचशील पार्क, नजदीक पंचशील क्लब,
आउटर रिंग रोड, नयी दिल्ली-110 017

श्री रौनक महाजन (न्यासी)
जन्म : 1982, प्रबन्धन सलाहकार
पता : डी-15, महारानी बाग,
नयी दिल्ली-110 065

श्री मुदित जैन (न्यासी)
जन्म : 1962, व्यवसाय
पता : 'शिखर कुंज', 10वीं मंज़िल,
29/ए, एम.एल. दाहनुकर मार्ग,
मुम्बई-400 026

न्यायमूर्ति एस.एन. अग्रवाल (न्यासी)
जन्म : 1950, न्यायाधीश (सेवानिवृत्त)
पता : फ्लैट नं. 302, द्वितीय तल,
ब्लॉक-4, 19, राजपुर रोड,
दिल्ली-110 054

श्री ए.पी.एस. खाती (न्यासी)
जन्म : 1962, कार्यकारी सम्पादक, नवभारत टाइम्स
पता : 561, प्रथम तल,
सेक्टर-4, वैशाली,
ग़ाजियाबाद-201010 (उत्तर प्रदेश)

साहू अखिलेश जैन (प्रबन्ध न्यासी)
जन्म : 1951, उद्योगपति और व्यवसायी
पता : सी-48, गुलमोहर पार्क,
नयी दिल्ली-110 049

Board of Trustees

Smt. Indu Jain (President Emeritus)
Born : 1936, Faizabad (U.P.), Philanthropist
Address : 6, Sardar Patel Marg,
New Delhi-110 021

Justice Vijender Jain (President)
Born : 1946, Justice (Retd.)
Address : Bungalow No. 136,
Sector-15A, Noida-201 301 (U.P.)

Smt. Aparajita Jain Mahajan (Life Trustee)
Born : 1980, Artist
Address : D-15, Maharani Bagh,
New Delhi-110 065

Smt. Trishla Jain (Life Trustee)
Born : 1985, Business
Address : 15, Moti Lal Nehru Marg,
New Delhi-110 011

Shri Swadesh Bhushan Jain (Trustee)
Born : 1946
Executive President of a daily newspaper
Address : E-82, Ashok Vihar,
Phase-I, Delhi-110 052

Shri S.K. Jain, I.P.S. (Trustee)
Born : 1951
N-86, Panchsheel Park,
Near Panchshila Club,
Outer Ring Road, Delhi-110 017

Shri Raunak Mahajan (Trustee)
Born : 1982, Management Consultant
Address : D-15, Maharani Bagh,
New Delhi-110 065

Shri Mudit Jain (Trustee)
Born : 1962, Business
Address : 'Shikhar Kunj', 10th Floor
29/A, M.L. Dahanukar Marg,
Mumbai-400 026

Justice S.N. Aggarwal (Trustee)
Born : 1950, Justice (Retd.)
Address : Flat No. 302, 2nd Floor, Block-4,
19, Rajpur Road, Delhi-110054

Shri A.P.S. Khati (Trustee)
Born : 1962, Executive Editor, Nav Bharat Times
Address : 561, First Floor, Sector 4
Vaishali, Ghaziabad-201010 Uttar Pradesh

Sahu Akhilesh Jain (Managing Trustee)
Born : 1951, Industrialist and Businessman
Address : C-48, Gulmohar Park,
New Delhi-110 049

Bharatiya Jnanpith

Vagdevi : the Award-symbol

Adopted for the symbol of the Jnanpith Award, this bronze Vagdevi Sarasvati was enshrined in the temple Sarasvati-kanthabharana-prasada, which was built at Dhara-nagari in Madhya Pradesh by the learned king Bhoja in A.D. 1035. Presently, it is displayed in the British Museum, London. Bharatiya Jnanpith added, behind Vagdevi's face, the halo where the earliest Jaina arch from the Kankaali mound of Mathura is inset to symbolize 'ratna-traya'. The book, the waterpot, the rosary and the lotus, held by Vagdevi, symbolize respectively, knowledge, self-control, dispassion and introspection.

A bronze replica of Vagdevi is presented to the Jnanpith Laureate.

भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-110 003
फोन : 2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
फैक्स: 011-2465 4197; ई-मेल : *marketing@jnanpith.net*